वर्ष : 18 अंक: 89 ग्वालियर • गुरुवार 01 मई 2025 • पृष्ठ: 8 मूल्य: 2 रु.

दैनिक

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, छत्तीसगढ़ से प्रकाशित

चम्बल सुर्खी

उत्कृष्ट एवं सफल प्रकाशन के 37 वर्ष

निष्पक्ष एवं निर्भीक विचारों का प्रवक्ता

आज का तापमान
अधिकतम 41 डिग्री
न्यूनतम 26 डिग्री

अमूल ने दूध की कीमतें बढ़ाईं

नई दिल्ली (ए.)। अमूल ने दूध की कीमतें बढ़ाने का एलान किया है। अमूल के दुग्ध उत्पादों की नई दरें कल सुबह यानी एक मई से प्रभावी होंगी। अमूल ने बताया कि देशभर में दूध की कीमत में दो रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी का फैसला लिया गया है। कि एक दिन पहले मदर डेयरी ने गर्मी के मौसम में बढ़ती लागत को देखते हुए दूध की कीमतों में बढ़ोतरी की है। कंपनी ने दूध की कीमतों में 2 रुपये प्रति लीटर तक की बढ़ोतरी की है। कंपनी के एक अधिकारी ने मंगलवार को बताया कि कीमतों में यह संशोधन 30 अप्रैल 2025 से पूरे बाजार में लागू होगा। मदर डेयरी अपने स्टोर, अन्य दुकानों और ई-कॉमर्स मंचों के जरिये दिल्ली-एनसीआर के बाजार में प्रतिदिन लगभग 35 लाख लीटर दूध बेचती है। मदर डेयरी के अधिकारी ने कहा, खरीद लागत में हुई वृद्धि से निपटने के लिए कीमतों में संशोधन जरूरी हो गया है।

बारिश से नरसिंह स्वामी मंदिर की दीवार गिरी

20 फीट लंबी दीवार गिरने से 7 श्रद्धालुओं की मौत, 4 घायल; जांच के आदेश

विशाखापट्टनम (ए.)।

आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में मंगलवार रात श्री वराह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर की दीवार का 20 फीट लंबा हिस्सा गिर गया। हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई और 4 घायल हो गए। मंदिर में चंदनोत्सव चल रहा था। यह हर साल मनाया जाता है। इसमें हजारों श्रद्धालु भगवान नरसिंह के दर्शन के लिए आते हैं। अधिकारियों के मुताबिक, हादसा देर रात 2: 30 से 3: 00 बजे के बीच तेज बारिश के कारण हुआ। कलेक्टर हरेंद्र प्रसाद ने बताया कि NDRF और SDRF ने रेस्क्यू पूरा कर लिया है। राय की गृह और आपदा प्रबंधन मंत्री वंगलापुड़ी अनिता भी तुरंत घटनास्थल पर पहुंचीं और हालात का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घायलों के इलाज और राहत-बचाव में कोई कोताही न हो। घटना की जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक व्यक्त किया है। PM ने कहा, लोगों की मौत की खबर से बहुत दुखी हूं। यही कामना है, घायल जल्द ठीक हों। प्रधानमंत्री राहत कोष (PMNRF) से मृतकों के परिजनों को रू.2 लाख और घायलों को रू.50,000 की सहायता राशि दी जाएगी।

चंदनोत्सव के चलते बड़ी संख्या में पहुंचे थे लोग

मंदिर में चंदनोत्सव चल रहा था। मान्यता है कि इस दौरान भगवान वराह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी अपने वास्तविक रूप में भक्तों को दर्शन देते हैं। भगवान के दर्शन के लिए मंगलवार रात बड़ी संख्या में भक्त सिंहगिरी पहुंचे थे। स्वामीजी को सुबह सेवा के साथ जगाया गया। इसके बाद भगवान के शरीर पर लगे चंदन को चांदी के चम्मच से हटाया गया। भगवान के लिए विशेष प्रार्थनाएं की गईं, जो अपने वास्तविक रूप में आ गए थे। मंदिर के वंशानुगत ट्रस्टी पुसापति अशोक गजपतिराजू और उनके परिवार के सदस्यों को पहला वास्तविक दर्शन कराया गया और उन्होंने भगवान को पहला चंदन अर्पित किया। बाद में राजस्व मंत्री अंगनी सत्य प्रसाद ने राय सरकार की ओर से रेशमी वस्त्र भेंट किए। इसके बाद प्रोटोकॉल और आंतरिक मंदिर दर्शन की व्यवस्था सुबह 3 बजे से 6 बजे तक की गई थी। इसी दौरान यह हादसा हुआ।

वीजा रद्द होने के बाद 786 पाकिस्तानियों ने छोड़ा भारत

नई दिल्ली (ए.)। पहलगाम आतंकवादी हमले के मद्देनजर जारी सरकारी आदेश के बाद पिछले छह दिनों में 55 राजनयिकों, उनके आश्रितों और सहायक कर्मचारियों सहित 786 पाकिस्तानी नागरिक अटारी-वाघा सीमा के जरिए भारत छोड़ चुके हैं। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। सरकारी सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तान के वीजा पर भारत में रह रहे आठ भारतीय नागरिक हाल ही में पाकिस्तान लौट गए हैं। इसके साथ ही, 24 अप्रैल से अब तक पंजाब की अंतरराष्ट्रीय सीमा से होते हुए कुल 1,465 भारतीय नागरिक भारत लौटे हैं, जिनमें 25 लोग राजनयिक या सरकारी अधिकारी हैं। वहीं, 151 पाकिस्तानी नागरिक जो लंबे समय तक भारत में रहने का वीजा रखते हैं, वे भी भारत आए हैं।सरकार ने 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले के बाद, जिसमें 26 लोगों की जान गई थी (ज्यादातर पर्यटक थे), कई पाकिस्तानी नागरिकों को भारत छोड़ने का नोटिस जारी किया था।दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) वीजा रखने वालों के लिए भारत छोड़ने की अंतिम तिथि 26 अप्रैल थी, जबकि मेडिकल वीजा धारकों को 29 अप्रैल तक देश छोड़ना था।

पाकिस्तान ने इंटरनेशनल बॉर्डर पर चौकियां खाली की

पाकिस्तानी झंडे हटाए | सीजफायर तोड़ने पर भारत ने पाकिस्तान को चेतावनी दी

नई दिल्ली (ए.)।

पहलगाम हमले के 8 दिन बाद बुधवार को पाकिस्तानी सेना ने इंटरनेशनल बॉर्डर पर कई पोस्ट खाली कर दी हैं। पाकिस्तानी सेना ने इन पोस्ट से झंडे भी हटा लिए हैं। कठुआ के पर्गवाल इलाके में ये पोस्ट खाली की गई हैं।

पाकिस्तानी सेना स्पष्ट पर लगातार सीजफायर वॉयलेशन कर रही है। पाकिस्तानी सेना ने बुधवार को पहली बार इंटरनेशनल बॉर्डर पर भी सीजफायर तोड़ा। जिसका भारतीय सेना ने तुरंत जवाब दिया। भारत और पाकिस्तान के मिलिट्री ऑपरेशन के महानिदेशकों ने हॉटलाइन पर बातचीत की और पाकिस्तान द्वारा बिना उकसावे के संघर्ष विराम उल्लंघन पर चर्चा की। भारत ने नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तानी सेना द्वारा बिना उकसावे के किए जा रहे संघर्ष विराम उल्लंघन के खिलाफ पाकिस्तान को चेतावनी दी। इस बीच, केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड का नए सिरे से गठन किया है। पूर्व रॉ चीफ आलोक जोशी को इसका चेयरमैन बनाया गया है। प्रधानमंत्री आवास पर सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी (CCS) बैठक खत्म हो गई है। CCS की यह दूसरी मीटिंग है, पहली मीटिंग पहलगाम अटैक के अगले दिन 23 अप्रैल को हुई थी।

कमेटी और केंद्रीय कैबिनेट की बैठक होगी

राहुल ने कहा, मैं आज कानपुर गया। मैंने पहलगाम हमले के विक्टिम से बात की। उन्हें बुरी तरह से मारा गया। मैं इस पर कमेंट नहीं करना चाहता हूं कि ये कैसे हुआ, क्यों हुआ? मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि जिन लोगों ने किया, वे जहां भी हैं, उन्हें भुगतना होगा। और पूरी तरह से सजा देनी होगी। उन्हें आलतू-फालतू तरीके से नहीं बल्कि पूरी तरह से सजा देनी होगी। ताकि उन्हें याद रहे कि हिंदुस्तान के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता। हमने क्लीयर लाइन दी है कि जो हुआ है वह स्वीकार नहीं है। पूरा-पूरा विपक्ष 100त्न समर्थन दे रहा है। नरेंद्र मोदी को एक्शन लेना होगा और वह भी सख्त। सरकार को समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

राजस्थान-यूपी समेत 8 राज्यों में हीटवेव अलर्ट-40 डिग्री पार जा सकता है टेम्परेचर

पूर्वोत्तर के 8 राज्यों में आज भारी बारिश की चेतावनी

जयपुर (ए.)।

मौसम विभाग ने अरुणाचल, सिक्किम समेत पूर्वोत्तर के 8 राज्यों में आज भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड समेत 10 राज्यों में ओले गिरने की संभावना जताई है। मौसम के इस बदलाव से इन राज्यों में पड़ रही तेज गर्मी से थोड़ी राहत मिल सकती है। राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, यूपी, मध्यप्रदेश, गुजरात में अगले 4 दिन तक हीट वेव और गर्मी का असर कम नहीं होने वाला है।

ओडिशा के झारसुगुड़ा और बौध, महाराष्ट्र के परभणी, उत्तर प्रदेश के कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी, हमीरपुर और गाजीपुर, बिहार के गया, औरंगाबाद और देहरी में पारा 44 डिग्री के पार रिकॉर्ड किया गया। राजस्थान के 16 शहरों में पारा 40 डिग्री से ज्यादा रहा। दिल्ली में रविवार को न्यूनतम तापमान 27.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मणिपुर के 21 विधायकों ने अमित शाह को लेटर लेखा

राज्य में शांति बहाली की मांग की; कांग्रेस बोली- विधायकों ने सरकार बनाने नियम तोड़े

इंफाल (ए.)।

मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद राय में शांति की बहाली के लिए, राय के 21 विधायकों ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को लेटर लिखा। इसमें लिखा गया कि राय में वो सरकार हो जिसका चुनाव जनता करे।

लेटर पर 13 भाजपा विधायकों, 3 एनपीपी विधायकों, 3 नगा पीपुल्स फ्रंट विधायकों और विधानसभा के दो सदस्यों ने साइन किए हैं। इसमें कहा गया कि मणिपुर के लोगों ने बहुत उम्मीद और अपेक्षा के साथ राष्ट्रपति शासन को स्वीकार किया। हालांकि, तीन महीने होने जा रहे हैं, लेकिन अभी तक शांति और सामान्य स्थिति लाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं देखी गई है। राय में फिर से हिंसा हो सकती हैराय के लोगों का मानना है कि हिंसा फिर से हो सकती है। कई नागरिक संगठन राष्ट्रपति शासन लागू करने के खिलाफ खुलकर सामने आए हैं और एक लोकप्रिय सरकार की स्थापना की मांग कर रहे हैं।

एक विधायक ने बताया कि यह लेटर गृह मंत्रालय को 29 अप्रैल को मिला था और बुधवार को सामने आया। विधायकों ने यह भी कहा, 'हमें लगता है कि मणिपुर में शांति और सामान्य स्थिति लाने के लिए ऐसी सरकार की स्थापना की जाए जिसे लोग पसंद करें, यही एकमात्र उपाय है। उन्होंने गृह मंत्री से अनुरोध किया कि मणिपुर के लोगों के हित में जल्द से जल्द लोकप्रिय सरकार स्थापित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं। हम आपको आश्वासन देते हैं कि लोकप्रिय सरकार की स्थापना के बाद हम शांति और सामान्य स्थिति लाने के लिए पूरी लगन और निष्ठा से काम करेंगे। हालांकि, मणिपुर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशम मेघचंद्र सिंह ने रायपाल को दरकिनार कर केंद्र को पत्र लिखने के लिए 21 विधायकों की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि इन विधायकों ने राय में सरकार बनाने के लिए नियम-कानून को दरकिनार कर दिया, जो वर्तमान में राष्ट्रपति शासन के अधीन है। मेघचंद्र ने X पर एक पोस्ट में लिखा, 'इन विधायकों को नई सरकार के गठन का दावा करने के लिए इंफाल में राजभवन जाना चाहिए था।

बंगाल के दीघा में बना पुरी जैसा जगन्नाथ मंदिर -20 एकड़ में फैला

दीघा (ए.)। पश्चिम बंगाल के पूर्वी मेदिनीपुर के दीघा में बने जगन्नाथ मंदिर का आज उद्घाटन हुआ। मंदिर में देवताओं की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इसके लिए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी यज्ञ-हवन और पूजा के लिए मंगलवार को ही दीघा पहुंच गई थीं। उद्घाटन के बाद लेजर शो और डायनेमिक लाइट शो रखा गया। मंदिर के उद्घाटन के लिए पहले दीघा की सड़कों को रोशनी से सजाया गया। दीवारों को नीले और सफेद रंग से रंगा गया। ओडिशा के पुरी में बने 12वीं सदी के मंदिर की तर्ज पर बने इस जगन्नाथ मंदिर का निर्माण करीब 20 एकड़ में किया गया है। इसके लिए राजस्थान के बंसी पहाड़पुर से लाल बलुआ पत्थर मंगाए गए थे। मंदिर से जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि अक्षय तृतीया के दिन होने वाली पूजा के दौरान कई अनुष्ठान होंगे। अनुष्ठान के लिए विभिन्न तीर्थ स्थलों से पवित्र जल पहले ही मंदिर में लाया जा चुका है। महायज्ञ में करीब 100 क्विंटल आम काठ (आम की लकड़ी) और बेल काठ (बिल्व की लकड़ी) तथा दो क्विंटल घी का इस्तेमाल किया गया। बंगाल सरकार मंदिर के उद्घाटन के बाद सालाना रथ यात्रा आयोजित करने की योजना बना रही है।

पीओके को वापस ले सरकार, मच्छर नहीं, ब्रीडिंग सेंटर पर हो हमला; आप की मांग

नई दिल्ली (ए.)।

पहलगाम हमले के बाद पूरे देश में गुस्सा बरकरार है। आम नागरिक से लेकर देश के राजनीतिक दल भी अब पाकिस्तान की आतंकी हरकतों को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं हैं। आम आदमी पार्टी ने मांग की है कि यही सही समय है जब केंद्र सरकार को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) को अपने कब्जे में ले लेना चाहिए। पाकिस्तान के सबसे ज्यादा आतंकी बेस कैंप भी इसी इलाके में हैं। पार्टी ने कहा है कि अब केवल छोटे-मोटे हमले करने से काम नहीं चलेगा, बल्कि सरकार को आतंकियों को पैदा करने वाले सेंटरों पर हमला करना पड़ेगा जिससे इस परेशानी का हमेशा के लिए खात्मा किया जा सके। जम्मू-कश्मीर 2.22 लाख वर्ग किलोमीटर का एरिया था। इसमें से करीब 1.06 लाख वर्ग किलोमीटर का एरिया भारत के पास है और 72 हजार वर्ग किलोमीटर से ज्यादा भारत का कश्मीर पाकिस्तान के पास है। लेकिन पाकिस्तान ने इस जमीन को भारत के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए यहां पर आतंकी ट्रेनिंग सेंटर बना दिए हैं।

अहमदाबाद के यूएन मेहता अस्पताल में 2.5 वर्षों में 50 सफल हृदय प्रत्यारोपण किए गए

अहमदाबाद (ए.)।

शहर के सिविल मेडिसिटी स्थित यू.एन. मेहता अस्पताल ने मात्र 2.5 वर्ष की छोटी सी अवधि में 50 सफल हृदय प्रत्यारोपण किए हैं। यह जानकारी देते हुए डॉ. चिराग दोशी ने कहा कि हृदय प्रत्यारोपण की असाधारण यात्रा की शुरुआत केंद्र और राज्य सरकारों के सहयोग से अहमदाबाद के प्रसिद्ध अस्पताल यू. एन. मेहता इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी एंड रिसर्च सेंटर (यूएनएमआईसीआरसी) द्वारा हृदय प्रत्यारोपण की असाधारण यात्रा की शुरुआत सितंबर-2022 में अपनी पहली सफल हृदय प्रत्यारोपण सर्जरी की ऐतिहासिक उपलब्धि के साथ हुई। तब से, इस संगठन ने अदम्य आशा, अथक परिश्रम और समर्पण के माध्यम से उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। हम स्वास्थ्य सेवा के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता तथा हमारे मरीजों के जीवन पर इसके गहन प्रभाव के लिए आभारी हैं। हमारे संगठन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए स्वस्थ भारत अभियान को पूरा करके महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। डॉ. चिराग दोशी ने कहा कि यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि सरकार के सहयोग से 50 मरीजों को सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण कर नया जीवन दिया गया है। इनमें 37 पुरुष, 11 महिला और 2 बाल रोगी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि यहां गुजरात सहित विभिन्न राज्यों और पड़ोसी राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र से मरीज आते हैं। मरीज अहमदाबाद, गांधीनगर, राजकोट, सूरत, वडोदरा, भावनगर और गुजरात के अन्य शहरों से आते हैं। जो हमारे उत्कृष्ट संस्थान पर उनके विश्वास को दर्शाता है। उल्लेखनीय बात यह है कि विश्व भर में हृदय प्रत्यारोपण के रोगियों की एक वर्ष की जीवित रहने की दर लगभग 90त्न है। यू.एन. मेहता अस्पताल में यह दर 92त्न तक रही है। संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रीय स्तर पर राज्य सरकार की सहायता से अल्प समय में 50 हृदय प्रत्यारोपण पूरा करने वाला सबसे तेज संस्थान भी है। एन. मेहता इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी एंड रिसर्च सेंटर (यूएनएमआईसीआरसी)। जो हृदय देखभाल में उत्कृष्टता और प्रतिबद्धता के लिए एक नया मानदंड स्थापित करता है।

कपास उत्पादक किसानों को मिलेगा पीएम मित्र पार्क से लाभ, 3 लाख रोजगार होंगे सृजित : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री जनकल्याण (संबल) योजना में 27 हजार से अधिक हितग्राहियों को 600 करोड़ रुपए किए अंतरित

भोपाल (ब्यूरो)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार ने गरीब, युवा, अन्नदाता (किसान), और नारी सशक्तिकरण के लिए 4 मिशन लॉन्च किए हैं। हितग्राहियों को कई जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधा लाभ दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सबका साथ, सबका विकास के मूल मंत्र से राज्य सरकार प्रदेश को समृद्ध और सशक्त बनाने के लिए संकल्पित है। युवाओं को रोजगार, लाड़ली बहनों को आर्थिक सहायता, गरीब जरूरतमंदों के निश्शुल्क उपचार की व्यवस्था है।

जनजातीय क्षेत्रों सहित प्रदेश के किसानों की आय बढ़ाने के लिए राज्य सरकार ने विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं का जाल बिछाया है। हमारा लक्ष्य प्रत्येक खेत तक पानी पहुंचाकर प्रदेश के सिंचित रकबे को 55 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 1 लाख हेक्टेयर करना है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इसके लिए केन-बेतवा लिंक और पार्वती-चंबल-कालीसिंध लिंक परियोजनाओं की शुरुआत की है। उन्होंने कहा कि धार को पीएम मित्र पार्क की सौगात केन्द्र से मिली है। यहां 2100 करोड़ से औद्योगिक पार्क आकार लेगा और लगभग 3 लाख रोजगार सृजित होंगे। धार अंचल के किसान कपास की खेती करेंगे तो उन्हें भी अधिक लाभ होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को धार के उमरबन में आयोजित सामूहिक विवाह एवं हितलाभ वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में राज्यसभा सदस्य श्री सुमेर सिंह सोलंकी, विधायक श्री हीरालाल अलावा, विधायक श्री कालू सिंह ठाकुर ,श्रीमती रंजना बघेल, श्री चंचल पाटीदार, श्री सरदार सिंह सहित बड़ी संख्या में हितग्राही उपस्थित थे।

श्योपुर में 231, वीरपुर में 41 जोडे परिणय सूत्र में बंधे

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना सामाजिक सरोकार से परिपूर्ण योजना है-सांसद, योजना के तहत 49-49 हजार राशि के चैक उपहार स्वरूप दिये गये, सांसद सहित जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी रहे मौजूद

श्योपुर ब्यूरो। मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना अंतर्गत आज जनपद एवं नगर पालिका परिषद श्योपुर के संयुक्त तत्वाधान में नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश शुक्ला के मार्गदर्शन में तथा कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा के निर्देशन में श्योपुर स्थित हैवी मशीनरी टीनशैड में सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। श्योपुर में सांसद श्री शिवमंगल सिंह तोमर के मुख्य आतिथ्य में आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन में 231 जोडे परिणय सूत्र में बंधे। इसी प्रकार जनपद पंचायत विजयपुर के तत्वाधान में मंडी प्रांगण वीरपुर में आयोजित विवाह सम्मेलन में 41 जोडो में फेरे लिये। राज्य शासन की योजना के तहत वर-वधु को 49-49 हजार रूपये की राशि के चैक उपहार स्वरूप प्रदान किये गये। क्षेत्रीय सांसद श्री शिवमंगल सिंह तोमर ने मुख्य अतिथि के रूप में दिये अपने संबोधन में कहा कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना एक सामाजिक सरोकार से परिपूर्ण योजना है, जिसका हर वर्ग को लाभ मिल रहा है। शासन द्वारा न केवल विवाह के प्रबंध किये जा रहे है बल्कि नवविवाहित जोडो को अपनी गृहस्थी शुरू करने के लिए 49 हजार रूपये की उपहार राशि भी दी जा रही है। भाजपा जिला अध्यक्ष श्री शंशाक भूषण ने इसे शासन की महती योजना बताते हुए कहा कि अब बेटियों के हाथ पीले करने में हर वर्ग को इसका लाभ मिल रहा है। उन्होने कहा कि मध्यप्रदेश की सरकार द्वारा अनेको कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है। आज श्योपुर में 231 कन्याओं के हाथ पीले हुए है, यह एक पुण्य का कार्य है, जिले में आगामी तिथियों में भी विवाह सम्मेलन आयोजित होंगे। पूर्व विधायक श्री दुर्गालाल विजय ने कहा कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना हर परिवार के लिए लाभदायी है, बेटियों के विवाह की जिम्मेदारी सरकार निभा रही है तथा बडी संख्या में लोगों को इसका लाभ मिल रहा है। नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती रेणु सुजीत गर्ग ने कहा कि मध्यप्रदेश की सरकार संवेदनशील सरकार है, महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योजनाएं संचालित है। इन

योजनाओं का लाभ समाज के हर वर्ग को मिल रहा है। जनपद अध्यक्ष श्रीमती शीला आशीष मीणा ने कहा कि जनपद पंचायत के तत्वाधान में सामुहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिसका लाभ आम वर्ग को मिला है। इसी प्रकार के सम्मेलन आगामी तिथियों में भी आयोजित होंगे, जिसके लिए पंजीयन कराकर लाभ ले सकते है। भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य श्री महावीर सिंह सिसौदिया ने कहा कि प्रदेश की सरकार सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ कार्य कर रही है तथा आमलोगों को केन्द्र में रखकर योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। इस योजना से बेटियों को बोझ समझने की अवधारणा का अंत हुआ है। हैवी मशीनरी टीनशैड में आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन के दौरान कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष श्री शंशाक भूषण, पूर्व विधायक श्री दुर्गालाल विजय, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती रेणु सुजीत गर्ग, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शीला आशीष मीणा, भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य श्री महावीर सिंह सिसौदिया एवं श्री रामलखन नापाखेडली, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री नीरज जाट, जनपद उपाध्यक्ष प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्र मीणा, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष श्री संजय मंगल, जिला पंचायत सदस्य श्री गिरधारी बैरवा, श्री दिनेश दुबोलिया, श्री सुजीत गर्ग, एसडीएम श्री बीएस श्रीवास्तव, तहसीलदार श्री अर्जुन सिंह भदौरिया, सीईओ जनपद श्री एसएस भटनागर, पार्षदगण आदि उपस्थित थे। जनपद पंचायत विजयपुर के तत्वाधान में मंडी परिसर वीरपुर में आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन के दौरान सहरिया विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं कैबीनेट मंत्री दर्जा श्री तुरसनपाल बैरया, पूर्व विधायक श्री बाबूलाल मेवरा, जनपद अध्यक्ष श्री बदन सिंह रावत, सीईओ जनपद श्री आफिसर सिंह गुर्जर आदि अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि मौजूद रहें। सामुहिक विवाह सम्मेलन में गायत्री परिवार द्वारा वैदिक रीति से सभी जोडो का पाणिग्रहण संस्कार संपन्न हुआ। इस अवसर पर वर एवं वधु पक्ष के परिजन भी उपस्थित रहें। कार्यक्रम के दौरान विवाह सम्मेलन में शामिल होने वाले लोगों के लिए भोजन, पानी, छाया आदि की पर्याप्त व्यवस्थाएं की गई थी।

27 हजार 523 श्रमिक परिवारों को मिला संबल का लाभ

श्योपुर जिले के 560 हितग्राहियों को मिली 11 करोड 90 लाख की राशि, श्योपुर जिले के 93 हजार किसान सीएम किसान सम्मान निधि से हुए लाभान्वित, जिला स्तरीय कार्यक्रम स्थानीय एनआईसी में आयोजित

श्योपुर ब्यूरो। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा उमरबन जिला धार में आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना के तहत 27 हजार 523 श्रमिक परिवारों को 600 करोड रूपये की अनुग्रह सहायता राशि का वितरण सिंगल क्लिक के माध्यम किया गया। इसके साथ ही मुख्यमंत्री किसान कल्याण सम्मान निधि योजना के तहत 85 लाख से अधिक किसानों को 1704.94 करोड रूपये की राशि भी अंतरित की गई। उक्त कार्यक्रम का लाइव प्रसारण जिला स्तर सहित नगरीय निकायों एवं जनपद पंचायतो में आयोजित कार्यक्रम के दौरान किया गया। श्योपुर जिले में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन कलेक्ट्रेट स्थित एनआईसी कक्ष में संपन्न हुआ। जहां संबल योजना के हितग्राहियों को प्रतीकात्मक रूप से राशि अंतरित करने के प्रमाण पत्र सौपे गयें। श्योपुर जिलें में 560 हितग्राहियों को 11 करोड 90 लाख रूपये की राशि अंतरित की गई। जिला स्तरीय कार्यक्रम के दौरान एनआईसी कक्ष श्योपुर में डिप्टी कलेक्टर श्री वायएस तोमर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री नीरज जाट, पार्षद श्रीमती नाथी बाई, परियोजना अधिकारी श्रीमती सारिका पाटीदार, श्रम निरीक्षक श्रीमती लक्की शिवहरे सहित हितग्राही उपस्थित थे। जिले की जनपद पंचायत कराहल, विजयपुर मुख्यालय एवं नगर परिषद विजयपुर, बडोदा मुख्यालयों पर भी कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा राज्य स्तरीय कार्यक्रम का सीधा प्रसारण हुआ।

जिले के 560 परिवारो को मिला संबल का लाभ

मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना के तहत श्योपुर जिले में 560 परिवारो को लाभ प्राप्त हुआ है, योजना के तहत हितग्राही परिवारो के बैंक खातो में 11 करोड 90 लाख रूपये की राशि अंतरित की गई है। सामान्य मृत्यु के प्रकरणों में 525 हितग्राही परिवारों को 10 करोड 50 लाख तथा दुर्घटना मृत्यु के प्रकरणों में 35 हितग्राहियों को 1 करोड 40 लाख रूपये की अनुग्रह सहायता राशि प्रदाय की गई। उल्लेखनीय है कि उक्त योजना के तहत सामान्य मृत्यु पर दो लाख रूपये तथा दुर्घटना में मृत्यु पर चार लाख रूपये की अनुग्रह राशि पीडित परिवार को प्रदान की जाती है। इस अवसर पर नगरपालिका श्योपुर तथा जनपद पंचायत श्योपुर के हितग्राहियों केा प्रतीकात्मक रूप से संबल योजना के तहत लाभान्वित किया गया। कार्यक्रम के दौरान नगरपालिका श्योपुर क्षेत्र की हितग्राही श्रीमती मांगीबाई सुमन वार्ड 01, श्रीमती नाजरा बानो वार्ड 04, श्री जगदीश आर्य वार्ड 06, श्रीमती मीरा बाई वाल्मिक वार्ड 05 को 2-2 लाख रूपये तथा श्रीमती गुड्डी बाई सुमन वार्ड 13 को 4 लाख रूपये की अनुग्रह राशि अंतरित किये जाने के स्वीकृति पत्र प्रदान किये गये। इसी प्रकार जनपद पंचायत श्योपुर क्षेत्र अंतर्गत श्रीमती सीमा बाई अजापुरा, श्री रामबिलास कनापुर, श्रीमती द्वारिका कनापुर को 2-2 लाख रूपये तथा कु. शीतल अजापुरा एवं श्री बाबूलाल पाण्डोला को 4-4 लाख रूपये की अनुग्रह राशि अंतरित किये जाने के स्वीकृति पत्र प्रदान किये गये।

श्योपुर जिले के 93 हजार किसान सीएम किसान सम्मान निधि से हुए लाभान्वित

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा मुख्यमंत्री किसान कल्याण सम्मान निधि योजना के तहत प्रदेश के 85 लाख से अधिक किसानों को 1704.94 करोड रूपये की राशि भी अंतरित की गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से श्योपुर जिले के 93 हजार किसान भी लाभान्वित हुए। वर्ष 2025-26 की प्रथम किस्त के रूप में किसानों को दो-दो हजार रूपये की राशि बैंक खातो में अंतरित की गई।

सनसनीखेज मामले में सौतेले पिता द्वारा बलात्संग करने वाले आरोपी को आजीवन कारावास (शेष प्राकृतिक जीवन काल तक) व जुर्माने से दण्डित

श्योपुर ब्यूरो। अभियोजन कहानी का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि पीड़िता अपनी माँ के साथ रहती थी। पीड़िता के पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गयी थी। आरोपी उसका सौतेला पिता है। घटना सन 2023 की है। पीड़िता को पेट में दर्द की शिकायत होने से वह अस्पताल अपने सौतेले पिता (आरोपी) के साथ गई थी। वहाँ से पुलिस श्योपुर उसे अस्पताल ले गयी थी। जहाँ पर डॉक्टर ने पीड़िता की जाँच की, रिपोर्ट में पता चला कि वह 15 सप्ताह की गर्भवती है तथा उसकी आयु 12 वर्ष 10 माह है। तब पीड़िता की माँ ने उससे पूछा तब उसने बताया कि उसे जान से खत्म करने की धमकी देकर आरोपी ने उसके साथ करीब 10 माह तक कई बार अवैध संबंध बनाये है जिससे वह गर्भवती हुई। आरोपी द्वारा पीड़िता के साथ कई बार गलत काम (अवैध संबंध बनाये) किया गया। उक्त प्रकरण सनसनीखेज के रूप में चिन्हित किया गया था। इस कारण आरोपी के विरूद्ध थाना बड़ौदा में अप.क्र. 211/24 भादिव व पॉक्सो एक्ट के अन्तर्गत अपराध पंजीबद्ध कर प्रकरण माननीय विचारण न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। माननीय विचारण न्यायालय श्रीमान तृतीय अपर सत्र न्यायाधीश (श्रीमती बबीता होरा शर्मा)/अन्यय विशेष न्यायालधीश पॉक्सो श्योपुर में आरोपी पर धारा 376एबी भादवि 5 (एम)/6 पॉक्सा, धारा 376 (2) (एफ)/(च) भादवि 5एन/6, 376 (2) (एन) भादवि 5 (एल)/6 पॉक्सो, धारा 5(र) (पप) /6 पॉक्सो, धारा 376 (2) (एच) भादवि 5 (क्यू) /6 पॉक्सो में आजीवन कारावास (शेष प्राकृतिक जीवन काल के लिये कारावास), धारा 506 भाग 2 भादवि में 07 वर्ष का कठोर कारावास व कुल 60,000 शब्दो में साठ हजार रूपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया। पीड़िता को प्रतिकर के रूप में 3,00,000 शब्दो में तीन लाख रूपये का आदेश माननीय न्यायालय द्वारा किया गया। प्रकरण में शासन की ओर से पैरवी आर.के. बरैया डी.पी.ओ श्योपुर एवं सहायक के रूप में रिचा शर्मा विशेष लोक अभियोजक व हरिओम शर्मा ए.डी.पी.ओ. द्वारा की गयी।

नौनार सरकार कराहल में सामुहिक विवाह सम्मेलन आयोजित

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के उद्बोधन का लाइव प्रसारण

श्योपुर ब्यूरो। श्योपुर जिले के आदिवासी विकासखण्ड कराहल क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल नौनार सरकार पर मंहत श्री गोपालदास जी महाराज के सानिध्य में आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन में 161 जोडे परिणय सूत्र में बंधे। नौनार सरकार के महंत श्री गोपालदास जी महाराज के सौजन्य से आयोजित उक्त सामूहिक विवाह सम्मेलन कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव धार स्थित उमरबन में आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन कार्यक्रम के माध्यम से जुडें तथा उनके उद्बोधन का लाइव प्रसारण संपन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्रीय सांसद श्री शिवमंगल सिंह तोमर, कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अर्पित वर्मा, पुलिस अधीक्षक श्री वीरेन्द्र जैन, पूर्व मंत्री श्री रामनिवास रावत, भाजपा जिला अध्यक्ष श्री शंशाक भूषण, पूर्व विधायक श्री दुर्गालाल विजय, श्री बृजराज सिंह चौहान, श्री सीताराम आदिवासी, भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य श्री महावीर सिंह सिसौदिया, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती रेणु सुजीत गर्ग, भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जाट एवं श्री अशोक गर्ग, युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष श्री मोनू सोनी, श्री सुजीत गर्ग, श्री युवराज यादव, श्री बाबू सिंह यादव, श्री गिर्राज चौधरी, श्री दिनेश दुबोलिया, श्री हरेन्द्र राजावत सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के धार जिले के उमरबन में आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन कार्यक्रम के उद्बोधन का सीधा प्रसारण किया गया। उन्होने इस अवसर पर सभी नव विवाहित जोडो को शुभकामनाएं दी।

बाल विवाह रोकने के उद्देश्य से अक्षय तृतीया पर चलाया गया एक दिवसीय विशेष अभियान

श्योपुर ब्यूरो। म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के दिशा-निर्देशानुसार व माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री पवन कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में जिला प्रशासन, पुलिस विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग एवं बाल कल्याण समिति के समन्वय से अक्षय तृतीया के अवसर पर नालसा की स्कीम-बच्चों के लिये बाल-अनुकूल कानूनी सेवाएं योजना अंतर्गत बाल विवाह रोकने के उद्देश्य से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जिला श्योपुर अंतर्गत आयोजित किये जा रहे सामूहिक विवाह सम्मेलन स्थलों पर एक दिवसीय विशेष अभियान का आयोजन किया गया। उक्त विशेष अभियान के सफल कियान्वयन हेतु जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव श्रीमती वर्षा सूर्यवंशी मजुमदार द्वारा पैरालीगल वालेंटियर्स व पैनल लायर्स के साथ बैठक आयोजित कर जिला एवं तहसील स्तर पर विशेष दल गठित किये गये साथ ही उक्त विशेष अभियान हेतु अधिकृत नोडल अधिकारी जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री योगेश बंसल द्वारा सामूहिक विवाह स्थल पर उपस्थित होकर एस.डी.एम. श्री बी.एस. श्रीवास्तव, जनपद सी.ई.ओ. श्री एस.एस. भटनागर, पुलिस अधिकारीगण व अन्य प्रशासनिक अधिकारीगण से उक्त सम्मेलन में सम्मिलित वैवाहिक जोड़ो के आयु संबंधी जानकारी ली गई व गठित दल के पैरालीगल वालेंटियर्स व पैनल लायर्स द्वारा उक्त सम्मेलन में जोड़ो के परिवारजन से अभियान अंतर्गत बातचीत की गई। इसी अनुक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा गठित विशेष दल के माध्यम से जिले में आयोजित हो रहे विवाह सम्मेलनों में जाकर वर-वधू की आयु सबंधी जानकारी ली गई एवं बाल विवाह रोकने के उद्देश्य से लोगों को अवगत कराया।

जिले के 320 श्रमिकों के खाते में 6 करोड़ से अधिक की राशि हुई अंतरित, एनआईसी दतिया में देखा गया कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

दतिया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल 2.0 योजना अंतर्गत प्रदेश स्तर पर 27523 श्रमिक परिवारो को 600 करोड की राशि का वितरण उमरबान जिला धार से सिंगल क्लिक से किया गया। जिले के कुल 320 श्रमिक परिवारों को राशि रुपए 6 करोड़ 74 लाख रुपए से लाभान्वित किया गया। जनपद दतिया के कुल 93, नगरपालिका दतिया के 37, जनपद भांडेर के 72, नगरपालिका भांडेर के 13, जनपद सेवढ़ा 88, नगरपरिषद सेवढ़ा के 05, नगरपरिषद बडोनी के 03 तथा नगर परिषद इंदरगढ़ के 09 श्रमिक परिवारों को लाभान्वित किया गया। कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिनधि श्री प्रशांत ढेगुला, श्री दीपू सोनी, श्री कपिल दुवे सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण तथा जिले के हितग्राही भी उपस्थित रहे।

राज्य स्तरीय खेल वृत्ति हेतु आवेदन आमंत्रित

दतिया। संचालनालय खेल और युवा कल्याण विभाग मध्यप्रदेश द्वारा दिनांक 01 अप्रेल 2024 से 31 मार्च 2025 के मध्य आयोजित अधिकृत राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में पदक विजेता जिले के प्रतिभावान खिलाड़ियों से वर्ष 2024 की राज्य स्तरीय खेलवृत्ति के लिये आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। जिला खेल अधिकारी श्री अरविन्द सिंह राणा ने जानकारी देते हुये बताया कि अधिकृत राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी को 10 हजार रूपये, रजत पदक विजेता खिलाड़ी को 08 हजार रूपये एवं कांस्य पदक विजेता खिलाड़ी को 06 हजार रूपये खेल वृत्ति राशि प्रदान किये जाने का प्रावधान है। वर्ष 2024 की खेल वृत्ति हेतु आवेदन 31 मई 2025 तक स्वीकार किये जा सकेंगे। खेल वृत्ति के लिये आवेदन कार्यालय जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी स्टेडियम ग्राउण्ड दतिया से प्राप्त किये जा सकते हैं। 31 मई 2025 के पश्चात प्राप्त किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जावेगा। खेल वृत्ति के लिये निर्धारित दिशा-निर्देश व नियमावली विभागीय वेबसाइट www.dsywmp.gov.in पर उपलब्ध है।

अनिल पटेल का खेलो इंडिया बिहार के लिये चयन

दतिया। जिला मल्लखम्ब एसोसियेशन दतिया के अध्यक्ष श्री अनिल पटेल का खेलो इंडिया टूर्नामेंट बिहार के लिये कंपटीशन मेनेजर के लिये चयन किया गया है। जिला सचिव राजेन्द्र तिवारी ने जानकारी देते हुये बताया कि पटेल विगत 1989 से मल्लखम्ब खेल से जुड़े है और वर्तमान में मल्लखम्ब फेडरेशन ऑफइंडिया के टेक्नीकल कमेटी के अध्यक्ष भी है। बिहार में सातवें संस्करण खेलो इंडिया टूर्नामेंट का आयोजन 04 मई से 15 मई 2025 तक विभिन्न खेलों की प्रतियोगितायें आयोजित की जायेगी। प्रतियोगिता में श्री पटेल का कंपटीशन मेनेजर के लिये चयन किया गया है। इनके साथ 50 निर्णायक, 25 कार्यकर्ता और 244 खिलाड़ी बालक एवं बालिका साथी अधिकारी खेलो इंडिया के भारतीय खेल प्राधिकरण के मौजूद रहकर प्रतियोगिता समपन्न करायेंगे। श्री पटेल के चयन पर जिला खेल अधिकारी श्री अरविन्द सिंह राणा, जिला प्रशिक्षक श्री कुंवरराज, श्री जितेन्द्र शर्मा, श्री राजेश जलावड़ा, सीमा सेंगर, आदित्य सिंह, युवा समन्वयक श्री संजय रावत, श्री मानवेन्द्र सिंह, सोनम राजपूत सहित विभिन्न खेल संगठनों नें बधाई एवं शुभकामनायें दी।

बाल विवाह रोको जागरूकता अभियान चलाकर शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता रैली निकालकर दी जानकारी

दतिया। कलेक्टर श्री संदीप कुमार माकिन के निर्देशानुसार आज बुधवार को जिले में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह जागरूकता हेतु आंगनवाड़ी केन्द्र एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शपथ, रैली एवं बाल विवाह रोको उड़न दस्ता के साथ सामूहिक एवं एकल विवाह में बाल विवाह रोकने हेतु भ्रमण किया गया। महिला एवं बाल विकास विभाग की परियोजना अधिकारी शहरी श्रीमती प्रतिमा पाठक, परियोजना अधिकारी ग्रामीण-1 श्रीमती अनुराधा दुबे, परियोजना अधिकारी ग्रामीण-2 श्री विजय कुमार पंडौलिया उपस्थित रहे। साथ ही जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला न्यायालय दतिया सचिव न्यायाधीश के द्वारा गठित दल में सदस्य के रूप में चीफ लीगल एड डिफेंस काउसलिंग श्री केएन श्रीवास्तव, चीफ लीगल एड डिफेंस काउसलिंग श्री सलीम खान, असि. चीफ लीगल एड डिफेंस काउसलिंग श्री विजयराम दौहरे, पैरालीगल वालेंटियर श्री सुदीप तिवारी, पैरालीगल वालेंटियर सुश्री दीप्ती दांगी एवं पैरालीगल वालेंटियर श्री कमल किशोर जाटव उपस्थित रहे। उपस्थित सदस्यों द्वारा दतिया शहर में वार्ड 34 रेल्वे स्टेशन, दिनारा रोड़ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बाजनी, दुर्गापुर, आगोरा, भागौर, सीतापुर, सिनावल, राजापुर आदि में उड़न दस्ते के साथ भ्रमण कर ग्रामीणों को बाल विवाह के प्रति जागरूक करते हुए ग्रामीणजनों को चेतावनी देकर बताया कि यदि आप किसी ऐसे विवाह में शामिल होते है, जो बाल विवाह है जिसमें बालिका की उम्र 18 वर्ष से कम एवं बाल की उम्र 21 वर्ष से कम पाई जाती है तो आपके विरूद्ध बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 अंतर्गत कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

इसलिए यह सुनिश्चित करें जिस विवाह में आप धराती-बाराती या पडौसी बनकर जा रहे वह विवाह बाल विवाह न हो। इसीक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से उपस्थित सदस्यों एवं परियोजना अधिकारियों द्वारा बाल विवाह रोको अभियान चलाकर लोगों केा बाल विवाह रोको जागरूकता के लिए शपथ दिलवाई एवं रैली का आयोजन का बाल विवाह से होने वाले दुष्परिणाम के बारे में बताया गया।

जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री अरविंद उपाध्याय द्वारा जानकारी देकर बताया कि बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के तहत बाल विवाह कानूनन अपराध है। बाल विवाह की रोकथाम हेतु बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 लागू किया गया है। जिसमें 18 वर्ष से कम उम्र की लडकी एवं 21 वर्ष से कम उम्र के लडके का किया जाता है तो विवाह कराने वाले माता-पिता विवाह में शामिल होने वाले घारती-बाराती, बैंड, टेंट, मैरिज ब्यूरो, पुजारी आदि सभी को दो वर्ष का कठोर कारावास अथवा 1 रूपये का जुर्माना या दोनों को सजाओं को प्रावधान है। साथ ही बाल विवाह की सूचना आप जिला कंट्रोल रूम पर लिखित में मोबाइल नम्बर द्वारा 1098, 100, 07522-299213 अथवा भारत सरकार द्वारा संचालित बाल विवाह मुक्त भारत के पोर्टल पर ऑनलाइन भी दर्ज कर सकते है।

यात्रियों को झांसी रेल मंडल द्वारा विशेष सुविधा, 40 समर स्पेशल ट्रेन का संचालन, लगाएंगी 508 फेरे

झांसी। गर्मी की छुट्टियों में लोग बड़ी संख्या में भारत के विभिन्न हिस्सों में यात्रा करते हैं। यात्रियों की सुविधा और आरामदायक सफर के लिए झांसी रेल मंडल से इस समर सीजन में कुल 40 समर स्पेशल ट्रेनों का विभिन्न दिशाओं में गुजर रही हैं। यह ट्रेनें यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह स्पेशल ट्रेन अप्रैल, मई और जून तीनों महीनों में कुल 508 फेरे लगाए जाएंगे। झांसी मंडल की यह पहल यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करने के साथ-साथ सुरक्षित, समयबद्ध और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए की गई है। झांसी मंडल अपने उच्च स्तरीय सेवा मानकों को बनाए रखते हुए आगे भी यात्रियों को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। ग्रीष्मकालीन भीड़ को देखते हुए मंडल रेल प्रबंधक दीपक कुमार सिन्हा ने सभी स्टेशनों और गाड़ियों में स्वच्छ लिनेन उपलब्ध करवाने, खान-पान की अच्छी सुविधाएँ, गाड़ियों और स्टेशनों पर विद्युत और प्रकाश की सुविधाओं की उचित व्यवस्था की देखरेख हेतु संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देश दिए हैं। स्टेशन परिसर और ट्रेन परिसर को स्वच्छ रखने, प्लेटफार्म और टॉयलेट में पानी की व्यवस्था निर्बाध रखने, सभी यात्री सुविधाओं को सुचारु रखने आदि के निर्देश दिए गए हैं। झांसी मंडल के सभी प्रमुख स्टेशनों पर गाड़ियों के आरक्षित कोचों के निकट रेलवे सुरक्षा बल, वाणिज्य निरीक्षक, पर्यवेक्षक, मुख्य टिकट निरीक्षक उपस्थित रहकर स्टेशनों पर भीड़ को मॉनिटर कर रहे है।

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना आरोग्यता का है वरदान : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रधानमंत्री श्री मोदी का योजना के लिए माना आभार, आयुष्मान भारत दिवस पर दी बधाई

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आयुष्मान भारत दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आभार माना है। उन्होंने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना ने गुणवत्तापूर्ण, सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्रत्येक नागरिक तक पहुंचाई हैं। इससे जनसामान्य का आर्थिक बोझ कम हुआ है, यह उनके लिए एक प्रकार से आरोग्यता का वरदान है। यह योजना स्वस्थ भारत- समृद्ध भारत की संकल्पना को साकार कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आयुष्मान भारत दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री मोदी के इस अमूल्य उपहार के लिए प्रदेशवासियों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

संबल योजना के तहत ग्वालियर जिले के 387 हितग्राहियों के खातों में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पहुँचाई 8 करोड़ 42 लाख रूपए की अनुग्रह सहायता

जिले के 1,13,511 किसानों के खातों में किसान कल्याण योजना के तहत भी, पहुँचाए 22.70 करोड़ रूपए, मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने धार जिले के उमरबन में आयोजित हुए कार्यक्रम से सिंगल क्लिक के जरिए ग्वालियर सहित प्रदेश भर के हितग्राहियों के खातों में पहुँचाई धनराशि, कलेक्ट्रेट के एनआईसी कक्ष से जिले के किसान व संबल योजना के हितग्राही भी बने इस आयोजन के साक्षी

ग्वालियर। संबल योजना के तहत मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुधवार को धार जिले के उमरबन में आयोजित हुए कार्यक्रम से सिंगल क्लिक के जरिए ग्वालियर जिले के 387 प्रकरणों सहित प्रदेश के कुल 27 हजार 523 प्रकरणों में 600 करोड़ रूपए की धनराशि अंतरित की। जिसमें ग्वालियर जिले के 387 हितग्राहियों के खातों में पहुँची 8 करोड़ 42 लाख रूपए की धनराशि शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस कार्यक्रम से ही सिंगल क्लिक के जरिए मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत मौजूदा वित्तीय वर्ष की प्रथम किस्त के रूप में ग्वालियर जिले के एक लाख 13 हजार 511 किसानों के खातों में लगभग 22 करोड़ 70 लाख रूपए की धनराशि भी अंतरित की। यहाँ ग्वालियर कलेक्ट्रेट के एनआईसी कक्ष में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें संबल योजना के हितग्राही व मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना से जुड़े किसानों ने भाग लिया। बुधवार को यहाँ कलेक्ट्रेट में एनआईसी कक्ष में आयोजित हुए जिला स्तरीय कार्यक्रम में जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती प्रियंका सिंह, अपर कलेक्टर श्री कुमार सत्यम, संयुक्त कलेक्टर श्री विनोद सिंह, सहायक आयुक्त श्रम श्रीमती संध्या सिंह व श्री दीपक शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण मौजूद थे।

नीट परीक्षा के लिये ग्वालियर शहर में 26 केन्द्र बनाए गए

4 मई को होगी नीट परीक्षा

ग्वालियर। नीट परीक्षा के लिये ग्वालियर में 26 केन्द्र बनाए गए हैं। इन केन्द्रों पर 10 हजार 723 परीक्षार्थी नीट परीक्षा देंगे। नीट परीक्षा 4 मई को दोपहर 2 बजे से सायंकाल 5 बजे तक होगी। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देशन में ग्वालियर में नीट परीक्षा को सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न कराने के लिये व्यापक तैयारियां की गई हैं। परीक्षा के लिये बनाए गए 26 केन्द्रों में से 13 ङ्क 13 परीक्षा केन्द्रों पर एक सिटी समन्वयक नियुक्त किया गया है। यह जिम्मेदारी केन्द्रीय विद्यालय नं.-1 के प्राचार्य श्री राजेश पाण्डेय (मोबा. 9796800810) एवं केन्द्रीय विद्यालय क्र.-3 के प्राचार्य श्री रोहित सक्सेना (मोबा. 9460475735) को सौंपी गई है। नोडल अधिकारी श्री राजेश पाण्डेय के क्षेत्रांतर्गत आने वाले परीक्षा केन्द्रों के प्रश्न पत्र केनरा बैंक दाल बाजार तथा केनरा बैंक शिंदे की छावनी में रखे जायेंगे। इसी तरह नोडल अधिकारी श्री रोहित सक्सेना के क्षेत्र में आने वाले परीक्षा केन्द्रों के प्रश्न पत्र केनरा बैंक शिंदे की छावनी तथा एसबीआई सिटी सेंटर में रखे जायेंगे। परीक्षा दिवस के दिन परीक्षा केन्द्रों के केन्द्राध्यक्षों द्वारा बैंक से पुलिस अभिरक्षा में पेपर लिए जायेंगे तथा परीक्षा उपरांत अपने-अपने नोडल अधिकारी कार्यालय प्राचार्य केवी ङ्क 1 तथा प्राचार्य केवी ङ्क 3 में जमा किए जायेंगे। पेपर की सामग्री कब प्राप्त करना है इसकी जानकारी एनटीए द्वारा दी जायेगी।

जिले के 6 और पेट्रोल पंपों पर 10 शक्ति दीदियाँ संभालेंगीं फ्यूल डिलेवरी वर्कर की जिम्मेदारी

कलेक्टर, एसएसपी एवं जिला प्रशासन के अन्य अधिकारी पेट्रोल पंपों पर पहुँचकर करेंगे, शक्ति दीदियों का उत्साहवर्धन, 35 शक्ति दीदियाँ पहले से ही कर रहीं हैं यह काम

ग्वालियर। ग्वालियर जिले में महिला सशक्तिकरण की दिशा में ÷शक्ति दीदी÷ के नाम से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा के अनुरूप प्रेरणादायी पहल हुई है। इस पहल से जरूरतमंद महिलाओं को लगातार सहारा मिल रहा है। शक्ति दीदी योजना के तहत महिलाओं को पेट्रोल पंपों पर फ्यूल डिलेवरी वर्कर के रूप में जिला प्रशासन द्वारा नौकरी दिलाई जा रही है। श्रमिक दिवस एक मई के अवसर पर ÷शक्ति दीदी÷ पहल के तहत 10 और जरूरतमंद महिलाओं को फ्यूल डिलेवरी वर्कर की जिम्मेदारी मिलने जा रही है। ज्ञात हो शक्ति दीदी के तहत पहले से ही शहर में 35 महिलाएं यह भूमिका सफलतापूर्वक निभा रही हैं। गुरुवार को 10 और महिलाओं के जुड़ जाने से जिले में शक्ति दीदियों की संख्या 45 हो जायेगी। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री धर्मवीर सिंह सहित जिला प्रशासन के अन्य वरिष्ठ अधिकारी विभिन्न पेट्रोल पंपों पर पहुँचकर महिलाओं को ÷शक्ति दीदी÷ के रूप में फ्यूल डिलेवरी वर्कर की जिम्मेदारी दिलायेंगे। साथ ही उनका उत्साहवर्धन करेंगे। कलेक्टर एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एक मई को प्रात: 11.30 बजे पिछोर तिराहा डबरा स्थित सोनी फ्यूल्स पेट्रोल पंप पर सुश्री मंजू श्रीवास्तव व सुश्री रजनी राजपूत एवं रनवीर फिलिंग स्टेशन भितरवार रोड डबरा पर सुश्री राजकुमारी दौनेरिया व सुश्री सोनिया जोशी को फ्यूल डिलेवरी वर्कर के रूप में शक्ति दीदी की जिम्मेदारी सौंपेंगे। इसी तरह ग्वालियर में रेसकोर्स रोड स्थित केसर सर्विस पेट्रोल पंप पर एसडीएम लश्कर श्री नरेन्द्र बाबू यादव, सुश्री निशा अहिरवार व सुश्री मनीषा अहिरवार को फ्यूल डिलेवरी वर्कर का दायित्व सौंपेंगे। जलालपुर चौराहा स्थित कमलजीत फिलिंग स्टेशन पर सुश्री आरती एवं ऋतुराज होटल के समीप स्थित राधिका मोहन फिलिंग स्टेशन पर सुश्री ममता जाटव व सुश्री चन्द्रा अहिरवार को जिला आपूर्ति नियंत्रक शक्ति दीदी की जिम्मेदारी सौंपेंगे। लक्ष्मीगंज स्थित जैन ब्रदर्स पेट्रोल पंप पर सुश्री भावना कुशवाह शक्ति दीदी योजना के तहत फ्यूल डिलेवरी वर्कर की जिम्मेदारी संभालेंगीं।

मारपीट कर जबरदस्ती 25 हजार रूपये यूपीआई करवाने वाले 05 हजार के अंतिम इनामी आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

उक्त प्रकरण में पुलिस द्वारा 05-05 हजार के दो इनामी आरोपियों को पूर्व में गिरफ्तार किया जा चुका है।

ग्वालियर। फरियादी सोमिल शर्मा पुत्र नरेन्द्र शर्मा उम्र 24 साल निवासी मीरा नगर मुरार ग्वालियर ने थाना मुरार में रिपोर्ट लेख कराई थी कि दिनांक 28.12.2024 को दोपहर के समय वह बारादरी चौराहा आर्य समाज मंदिर के पास खड़ा था, तभी काले रंग की एक नैक्सोन कार से 05 लड़के आये और मुझे जबरदस्ती गाड़ी में बिठा लिया तथा मुझे डबरा हाइवे तरफले गये और चलती गाडी में मेरी लात घूंसो से पिटाई की और गंदी-गंदी गालिया दी और एक लड़के ने मुझसे कहा कि तूने हमसे 8,000/- रुपये लिये थे अब तू उसके बदले हम लोगों को 25 हजार रुपये दे तब तुझे छोड़ेंगे, फिर इन लोगो ने मुझे डबरा तरफ हाइवे के किनारे सूनसान जगह पर ले जाकर गाडी से उतारकर बैल्टों से मेरी पिटाई की उसके बाद यह लोग मुझे गाड़ी में बैठाकर इंदरगढ तरफले गये जब मैने कहा कि मुझे आधा घण्टा दो मै तुम्हे पैसे करवा दूंगा तो फिर मैने अपने मोबाइल से अपनी मौसी के लडके शिवम शर्मा को कॉल कर 25 हजार रुपये मांगे और शिवम शर्मा को गाड़ी में बैठे लड़के का यूपीआई मोबाइल नम्बर दिया जिस पर शिवम शर्मा ने 25 हजार रुपये ऑनलाईन ट्राजेक्शन करवाये। इसके बाद इन लोगों ने मुझे वापस बारादरी के पास कार से छोड दिया और कहा कि किसी को कुछ बताया तो जान से खत्म कर देगे। फरियादी की रिपोर्ट पर से थाना मुरार में नामजद 05 आरोपियों के खिलाफ अप0क्र0 693/24 धारा 140(3),296,351(3)बीएनएस का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया था। दिनांक 28.04.2025 को ग्वालियर पुलिस ने कार्यवाही करते हुये उक्त प्रकरण के 05-05 हजार रूपये के दो इनामी आरोपियों को हरिद्वार व गाजियाबाद से गिरफ्तार किया था। उक्त प्रकरण में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री धर्मवीर सिंह,भापुसे द्वारा अति. पुलिस अधीक्षक (पूर्व/यातायात/अपराध) श्री कृष्ण लालचंदानी(भापुसे) एवं अति. पुलिस अधीक्षक(मध्य) श्रीमती सुमन गुर्जर को फरार चल रहे अंतिम इनामी आरोपी को थाना मुरार एवं क्राईम ब्रांच की संयुक्त टीम से पकड़वाने हेतु निर्देषित किया गया। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देषों के परिपालन में डीएसपी अपराध श्री नागेन्द्र सिंह सिकरवार एवं सीएसपी मुरार श्री राजीव जंगले के कुषल मार्गदर्षन में कार्य करते हुए थाना प्रभारी क्राईम ब्रांच निरीक्षक अमित शर्मा एवं थाना प्रभारी मुरार निरीक्षक मैना पटेल के द्वारा पुलिस की संयुक्त टीम को उक्त प्रकरण में फरार अंतिम इनामी आरोपी को पकड़ने हेतु लगाया गया। आज दिनांक 30.04.2025 को पुलिस टीम द्वारा तकनीकी सहायता एवं मुखबिर सूचना पर से उक्त प्रकरण में फरार अंतिम इनामी आरोपी को नदी पार टाल, न्यू शर्मा नगर ठाठीपुर से पकड़ लिया गया। पकड़े गये आरोपी से उक्त प्रकरण के संबंध में गहनता से पूछताछ की गई तो उसके द्वारा अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर घटना कारित करना स्वीकार किया है। पुलिस टीम द्वारा उक्त इनामी आरोपी को थाना मुरार के अपराध क्र0- 693/24 धारा 140(2),296,351(3) बीएनएस, इजाफ धारा 115(2) बीएनएस, 11/13 एमपीडीपीके एक्ट के प्रकरण में विधिवत गिरफ्तार किया गया। पकड़े गये आरोपी की गिरफ्तारी पर पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा 05 हजार रूपये का इनाम घोषित किया गया था।

सराहनीय भूमिका:- थाना प्रभारी क्राईम ब्रांच निरीक्षक अमित शर्मा, थाना प्रभारी मुरार निरीक्षक मैना पटेल, उनि0 नरेंद्र सिसौदिया, उनि0 रजनी रघुवंशी, उनि0 दिनेश सिंह तोमर, प्र.आर. अजय शर्मा, आर0 अभिलेख बघेल, राजू मोगिया, योगेन्द्र सिकरवार, पवन झा, प्रमोद शर्मा, सोनू प्रजापति की सराहनीय भूमिका रही।

थाना तिघरा क्षेत्र में कैथा गांव के पास कट्टा अड़ाकर महिला के गहने व नगदी लूटने वाले दो लुटेरों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

उक्त लुटेरों से लूटी गई रकम में से 4500 रूपये नगद, घटना में प्रयुक्त दो 315 बोर के कट्टा मय 08 जिंदा राउण्ड, एक लोहा काटने का बड़ा कटर, 03 पेचकस, 04 मोबाइल तथा अन्य सामान किया जप्त।

ग्वालियर। फरियादी नारायण सिंह कुशवाह निवासी ग्राम तालपुरा थाना तिघरा जिला ग्वालियर ने थाना तिघरा में रिपोर्ट लेख कराई थी कि दिनांक 22.04.2025 के शाम को वह अपनी पत्नी व बच्चा के साथ बिलगांव कुआरी थाना कैलारस जिला मुरैना से शादी से आ रहा था। वह जैसे ही कैथा गांव के पुलिया के पास आया तो मेरे पीछे से एक लाल रंग की मोटर साईकिल पर 03 अज्ञात लोग मुंह पर कपड़ा बांधे हुए आये और उन्होने मेरी मोटर साईकिल को रोक लिया, दो लोग हाथों में देशी कट्टा लिये हुऐ थे। जिन्होने मुझे एवं मेरे लड़के के सामने कट्टा लगा दिया। एक ने मेरी पत्नी के पहने हुये गहनों की छीना झपटी करना शुरु कर दी। मेरी पत्नी के कानों की 01 जोड़ी सोने की झुमकी, 01 नग सोने के मंगल सूत्र, 02 नग सोने का पेन्डल, 01 नग चांदी की करधौनी सभी पुराने इस्तेमाली एवं मेरी पत्नी से 5000 रूपये नगद छीन लिये। फरियादी की रिपोर्ट पर से थाना तिघरा में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ अप0क्र0 29/25 धारा 309(6) बीएनएस एवं 11/13 एमपीडीपीके एक्ट का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। कट्टा अड़ाकर हुई उक्त लूट की घटना को गंभीरता से लेते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री धर्मवीर सिंह,भापुसे द्वारा प्रकरण में वांछित सभी आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी हेतु थाना तिघरा पुलिस की टीम को लगाने हेतु अति. पुलिस अधीक्षक(मध्य) श्रीमती सुमन गुर्जर को निर्देषित किया गया। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देषानुसार सीएसपी ग्वालियर श्रीमती किरण अहिरवार के कुषल मार्गदर्शन में थाना प्रभारी तिघरा निरीक्षक षिवकुमार शर्मा के द्वारा थाना बल की टीम को उक्त लूट के प्रकरण में वांछित अज्ञात आरोपियों की पतारसी कर पकड़ने हेतु लगाया गया। दौराने विवेचना पुलिस टीम द्वारा आरोपियों की तलाष हेतु मुखबिर तंत्र को सक्रिय किया गया। दिनांक 29.04.2025 को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि उक्त लूट की घटना करने वाले बदमाष धार वाला पुल के पास मौजूद है। सूचना पर थाना प्रभारी तिघरा के नेतृत्व में पुलिस टीम धार वाला पुल के पास पहुंचे और आड़ में छिपकर देखा तो मुखबिर के बताये हुलिये के दो व्यक्ति धार वाला पुल के नीचे घास के मैदान मे बैठे हुए दिखे। पुलिस टीम को देखकर उनके द्वारा मौके से भागने का प्रयास किया गया लेकिन पुलिस टीम द्वारा चारों तरफ से घेराबंदी कर दोनों व्यक्तियों को पकड़ लिया गया। पूछताछ करने पर एक व्यक्ति ने ग्राम सीडना का पुरा थाना तिघरा हाल भूपेन्द्र सिंह गुर्जर का किराये का मकान भगत सिंह नगर थाना गोले का मंदिर जिला ग्वालियर (म.प्र.) एंव दूसरे ने ग्राम पारसेन थाना बिजौली जिला ग्वालियर (म.प्र.) का होना बताया। पुलिस द्वारा पकड़े गये दोनों संदिग्धों से उक्त लूट के प्रकरण के संबंध में पूछताछ की तो उनके द्वारा पुलिस को गुमराह करने का प्रयास किया गया लेकिन गहनता से पूछताछ करने पर उसने द्वारा दिनांक 22.04.2025 को अपने एक अन्य साथी के साथ मिलकर कैथा गांव तिराहा की पुलिया के पास कट्टा दिखाकर मोटर साइकिल सवार दंपत्ति के साथ सोने चांदी के आभूषण एवं 5000 रूपये नगदी की लूट करना स्वीकार किया। ग्वालियर पुलिस थाना तिघरा पुलिस द्वारा पकड़े गये आरोपियों से लूटे गये माल के संबंध में पूछताछ करने पर ग्राम सीडना का पुरा थाना तिघरा निवासी आरोपी की निषादेही पर उसके नीले स्लेटी रंग के बैग से एक 315 बोर का देशी कट्टा, 05 जिंदा कारतूस, 02 की पैड मोबाईल, एक लोहा काटने का बड़ा कटर, 03 पेचकस, एक मोबाईल सेमसंग कम्पनी का एवं 2500 रूपये नगद तथा अन्य सामान जप्त किये। ग्राम पारसेन थाना बिजौली जिला ग्वालियर निवासी दूसरे आरोपी के पास मिले लाल रंग के पिटठू बैग से एक 315 बोर का देशी कट्टा, 03 जिंदा कारतूस, एक मोबाईल चार्जर सफेद रंग का, ओप्पो कम्पनी का मोबाईल व 2000 रूपये नगद तथा अन्य सामान जप्त किये। उक्त दोनो आरोपियो से लूटे गये सोने चांदी के आभूषण एवं उक्त अपराध में प्रयुक्त लाल रंग की मोटर साईकिल के संबंध मे पूछताछ करने पर अपने तीसरे साथी के पास होना बताया। थाना तिघरा पुलिस द्वारा पकड़े गये दोनों आरोपियों को अप0क्र0 29/25 धारा 309(6) बीएनएस एवं 11/13 एमपीडीपीके एक्ट में विधिवत गिरफ्तार कर उनके क्षेत्र में हुई अन्य लूट की बारदातों के संबंध में पूछताछ की जा रही है। थाना तिघरा पुलिस द्वारा फरार आरोपी की तलाष में पुलिस टीमों को भी लगाया गया है।

जप्त मषरूका:- एक आरोपी से एक 315 बोर का देशी कट्टा, 05 जिंदा कारतूस तथा 02 की-पैड मोबाइल, एक लोहा काटने का बड़ा कटर, 03 पेचकस, एक एन्ड्रायड मोबाइल सेमसंग कम्पनी एवं 2500 रूपये नगद एवं अन्य सामान जप्त किये तथा दूसरे आरोपी एक 315 बोर का देशी कट्टा, 03 जिंदा कारतूस, ओप्पो कम्पनी का मोबाईल व एक मोबाइल चार्जर, तथा 2000 रूपये नगद एवं अन्य सामान जप्त किये।

सराहनीय भूमिका:- थाना प्रभारी तिघरा निरीक्षक शिव कुमार शर्मा, उनि. महेन्द्र सिंह कुशवाह, सउनि. फ्रिोज खान, आर. दीवन सिंह, आर. संजीव सिंह, आर. विमल सिंह, आर. शाहरूख की सराहनीय भूमिका रही।

थाना डबरा देहात पुलिस ने अवैध हथियार लिये आ रहे कार सवार 06 बदमाषों को पकड़कर उनसे अवैध हथियार किये जप्त

ग्वालियर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री धर्मवीर सिंह (भापुसे) के निर्देश पर ग्वालियर पुलिस द्वारा अवैध हथियार रखने व खरीद फरोख्त करने वालों के खिलाफ अभियान चलाकर प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। इसी तारतम्य में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक(ग्रामीण) श्री निरंजन शर्मा ने अपने अधीनस्थ समस्त थाना प्रभारियों को अपने थाना क्षेत्र में भ्रमण कर संदिग्ध व्यक्तियों को चेक कर अवैध हथियार रखने वालों के खिलाफ कार्यवाही करने हेतु निर्देषित किया गया। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशानुसार एसडीओपी डबरा जितेन्द्र नगाइच के कुशल मार्गदर्शन में थाना प्रभारी डबरा देहात निरीक्षक सुधाकर सिंह तोमर के द्वारा अवैध हथियार रखने वाले बदमाषों की धरपकड़ हेतु पुलिस की टीम गठित कर मुखबिर तंत्र सक्रिय करने के निर्देश दिये गये। दिनांक 29.04.2025 को रात्रि गष्त के दौरान पुलिस टीम को जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि कुछ लोग एक सफेद रंग की स्विफ्ट कार क्र. एमपी-33-सी-3653 में अवैध हथियार लिये हुये भितरवार से डबरा तरफ आ रहे हैं। उक्त सूचना पर से पुलिस टीम ने सफेद रंग की स्विफ्ट कार की तलाश की तभी भितरवार रोड़ से पुलिस टीम को मुखबिर के बताये हुलिया की एक सफेद रंग की स्विफ्ट कार आती हुई दिखी, जिसे पुलिस टीम द्वारा रोकने का प्रयास किया तो कार चालक द्वारा कार को तेज स्पीड में कार लेकर भागने का प्रयास किया, परन्तु पुलिस टीम द्वारा घेराबन्दी कर ग्राम कंचनपुर रोड़ पर कार को रोक लिया गया। पुलिस टीम द्वारा कार की तलाषी ली गई तो कार में 06 व्यक्ति बैठे मिले। पकड़े गये व्यक्तियों से नाम पता पूछने पर पहले ने स्वयं को ग्राम पैरा थाना चीनोर जिला ग्वालियर, दूसरे ने ग्राम बेरू थाना डबरा देहात जिला ग्वालियर, तीसरे ने ग्राम छोटी अकबई थाना डबरा देहात जिला ग्वालियर, चौथे ने ग्राम सालबई थाना डबरा देहात जिला ग्वालियर, पांचवे ने ग्राम भरथरी थाना आँतरी जिला ग्वालियर एवं छटवे ने ग्राम छोटी अकबई थाना डबरा देहात जिला ग्वालियर का रहने वाला बताया।

पकड़े गये सभी व्यक्तियों की तलाषी लेने पर उनके पास से 315 बोर के 02 देशी कट्टे मय 02 जिंदा राउण्ड, 315 बोर के 02 चले हुये राउण्ड तथा पांच एंड्राइड मोबाइल तथा एक कीपैड मोबाइल मिला। पकड़े गये आरोपियों का यह कृत्य 25/27 आर्म्स एक्ट के तहत दण्डनीय पाये जाने से उनके पास से मिले 315 बोर के 02 देशी कट्टे मय 02 जिंदा राउण्ड, 315 बोर के 02 चले हुये राउण्ड, 06 मोबाइल एवं स्विफ्ट कार को विधिवत जप्त किया गया।

पकड़े गये आरोपियों के खिलाफ थाना डबरा देहात में आर्म्स एक्ट का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पकड़े गये आरोपियों में से ग्राम पैरा थाना चीनोर निवासी पहले आरोपी के खिलाफ पूर्व से आर्म्स एक्ट के 06 प्रकरण पंजीबद्ध हैं तथा ग्राम छोटी अकबई थाना डबरा देहात निवासी तीसरे आरोपी के खिलाफ पूर्व से 01 अपराध पंजीबद्ध है।

जप्त मषरूका:- 315 बोर के 02 देशी कट्टे मय 02 जिंदा राउण्ड, 315 बोर के 02 चले हुये राउण्ड, 06 मोबाईल एवं एक सफेद रंग की स्विफ्ट कार क्र. एमपी 33 सी 3653 कुल जप्त मषरूका कीमती लगभग 03,40,500/- रूपये।

सराहनीय भूमिका:- थाना प्रभारी डबरा देहात निरी0 सुधाकर सिंह तोमर, उनि0 योगेन्द्र सिंह मावई, सउनि0 नन्दकिशोर झा, आर0 विकाश गौड़, शैलेन्द्र शर्मा, जितेन्द्र साहू, आकाश शर्मा, पवन यादव, आर0 चालक राघवेन्द्र यादव, बृजेष पचौरी, सैनिक अंकुर भार्गव की सराहनीय भूमिका रही।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना दिनांक: 25.04.2025

भारत के राष्ट्रपति के लिये तथा उनकी ओर से वरि. मंडल यॉंत्रिक इंजीनियर (डीजल), उत्तर मध्य रेल, झॉंसी द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिये ऑनलाईन (ई-टेन्डरिंग) के माध्यम से खुली निविदा आमंत्रित की जाती हैं।

निविदा सं: झॉंसी-एम-डीजल-डब्ल्यू0सी0-टी-04 -2025-26	
कार्य का विवरण: डीजल लोको शेड झॉंसी में आर0डी0एस0ओ0 स्पेसिफिकेशन संख्या एमएण्डसी / पीसीएन/100 / 2013 (या नवीनतम) के अनुसार 50 नंबर एच0एच0पी0 लोकोमोटिवों की पेन्टिंग एपोक्सी कम पॉलीयूरेथेन पेंट द्वारा।	
निविदा मूल्य: रु0. 63,47,868.00/-	**बयाना राशि:** रू0 1,27,000/-
निविदा प्रपत्र कीमत: रू0 0.00/-	**निविदा बंद होने की तिथि:** 26.05.2025
समापन अवधि: 36 माह, निविदाकार दिनांक **26.05.2025** को **15:00** बजे तक निविदा आनलाईन जमा कर सकेगें। पूर्ण विवरण एवं निविदा को प्रस्तुति करने के लिये भारतीय रेल के बेवसाईट **http://www.ireps.gov.in** पर देखे।	**726/25 (D)**

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

वर वधू एक दूसरे के माता-पिता का करें सम्मान : महापौर डॉक्टर शोभा सतीश सिकरवार

मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत नगर निगम ने कराए 111 जोड़ों के विवाह, साइंस कॉलेज के मैदान में 111 वर वधू ने लिए 7 फेरे

ग्वालियर। नगर निगम ग्वालियर द्वारा मुख्यमंत्री कन्यादान विवाह एवं निकाह योजना के अंतर्गत आज अक्षय तृतीया के दिवस साइंस कॉलेज के मैदान में 111 जोड़ों का विवाह/ निकाह पूर्ण विधि विधान के साथ संपन्न कराया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महापौर डॉक्टर शोभा सतीश सिंह सिकरवार ने सभी वर वधु को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि वह एक दूसरे के माता-पिता का पूर्ण सम्मान करें एवं परिवार के साथ सामाजिक दायित्वों का भी निर्वहन करें। साइंस कॉलेज नाका चंद्र बदनी के मैदान पर नगर निगम ग्वालियर द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उप नेता सत्ता पक्ष श्री मंगल यादव योगेंद्र भैया, मेयर इन काउंसिल की सदस्य श्रीमती गायत्री सुधीर मंडेलिया, नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय, अपर आयुक्त श्री मुनीष सिंह सिकरवार, उपायुक्त श्री सत्यपाल सिंह चौहान, नोडल अधिकारी श्रीमती पूर्वी अग्रवाल, सहायक नोडल अधिकारी खेल सुश्री विजेता चौहान, श्री नीरज श्रीवास्तव एवं समाजसेवी श्री अनूप जौहरी एवं श्री भदौरिया जी सहित बड़ी संख्या में वर वधु के परिजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। इसके पश्चात सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। महापौर डॉक्टर शोभा सतीश सिंह सिकरवार ने सभी वर वधु को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि सभी एक दूसरे का सम्मान करें, अपने आसपास सफाई रखें। जल का संरक्षण करें तथा एक दूसरे के माता-पिता एवं परिवार का सम्मान करें। इस अवसर पर नगर निगम आयुक्त श्री संघ प्रिय ने कहा कि मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत शान द्वारा गरीब एवं जरूरतमंद परिवार के बेटे बेटियों के विवाह हेतु यह योजना संचालित की जाती है, जिसमें अपने परिजनों एवं आसपास के लोगों को योजना की जानकारी दें तथा योजना का लाभ उठाएं। सामूहिक विवाह सम्मेलन में 107 जोड़ों का विवाह एवं चार जोड़ों का निकाह पूर्ण विधि विधान के साथ कराया गया। इस अवसर पर वर वधु को शासन की ओर से 49000 रुपए का चेक प्रदान किया गया। इसके साथ ही समाज सेवी संस्था द्वारा वॉल क्लॉक उपहार स्वरूप प्रदान की गई। इसके साथ ही अन्य समाजसेवियों द्वारा भी सहयोग प्रदान किया गया।

पुलिस विभाग ग्वालियर से सेवानिवृत्त हुए पुलिस अधिकारी व कर्मियों को एसएसपी ग्वालियर ने दी विदाई

ग्वालियर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री धर्मवीर सिंह(भापुसे) द्वारा पुलिस विभाग से सेवानिवृत हुए पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों को विदाई दी गई। इस मौके पर अति0 पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) श्री निरंजन शर्मा, सीएसपी मुरार श्री राजीव जंगले, डीएसपी (रेडियो) श्री राजकुमार कुषवाह, सूबेदार स्मृति दौहरे, मुख्य लिपिक नरेन्द्र तुनिया, सउनि(एम) कुलदीप सारस्वत, सउनि(एम) अभिषेक पाराषर सहित कार्यालयीन स्टाफ एवं सेवानिवृत हुए पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी व उनके परिजन उपस्थित रहे। आज पुलिस कन्ट्रोल रूम ग्वालियर सभागार में पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त हो रहे 07 पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों के लिये विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा पुलिस विभाग से सेवानिवृत्त हो रहे पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह देकर विदाई दी गई। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने सेवानिवृत्त पुलिसकर्मियों से नौकरी के दौरान उनके अनुभवों को भी साझा किया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने सेवानिवृत्त हुए पुलिसकर्मियों से उनके भविष्य के कार्यकलापों के बारे में जाना तथा उनको सेवानिवृत्त उपरांत स्वयं को सामाजिक कार्यों में व्यस्त करने की सलाह दी जिससे अभी तक रही व्यस्तता की दिनचर्या से बाहर निकलने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम के समापन पर पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने आज सेवानिवृत्त हो रहे पुलिसकर्मियों को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह देकर उनके बेहतर स्वास्थ्य व उज्जवल भविष्य की कामना की। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा सेवानिवृत्त हो रहे सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों से उनकी सेवाकाल के दौरान किये गये कार्यों की जानकारी ली गई। सेवानिवृत होने वाले पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारिगण इस प्रकार है- डीएसपी श्री अजीत सिंह चौहान, सउनि0 राकेष मिश्रा, सउनि0 भोगीराम शर्मा, प्र.आर0 रविन्द्र सिंह भदौरिया, प्र.आर0 रामदत्त शर्मा, प्र.आर0 राजीव कुमार राघव, प्र.आर0 सुरेन्द्र सिंह भदौरिया।

लव जिहाद करने वाले हिंदु बेटियों का धर्मांतरण करना भूल जायेंगे-आलोक शर्मा

बेटियां किसी भी समाज की हो हमारी बेटियां है

भोपाल। अक्षय तृतीया के पर भोपाल के गुफा मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में बीजेपी सांसद आलोक शर्मा ने लव-जिहाद पर विवादित बयान देते हुए कहा कि मेरा जन्म दाढ़ी-टोपी से निपटने के लिए हुआ है। सांसद ने कहा कि धर्मांतरण आज एक गंभीर चिंता का विषय है। हमें ऐसे लोगों को सीधे सजा देने का संकल्प लेना होगा। इसके बाद वह जीवन भर किसी हिंदू लड़की का धर्मांतरण करना भूल जाएंगे। उन्होनें पुराने भोपाल में हिंदुओं के पलायन को लेकर इसे चिंता का विषय बताया। उन्होनें कहा की मुस्लिम आबादी बढ़ रही है, हिंदू आबादी घट रही है। इसके लिये अब एकजुट होकर काम करना होगा। सांसद ने आगे कहा की 5 जून भोपाल के लिए ऐतिहासिक दिन होगा, जब बागेश्वर धाम के पं. धीरेंद्र शास्त्री इकबाल मैदान से हिंदुओं के पलायन को रोकने की आवाज उठाएंगे। वहीं लव जिहाद के मामले पर भोपाल मध्य विधानसभा से कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने पहचान बदलकर हिंदू युवतियों से रेप की घटना पर खुले शब्दो में कहा की बेटियां किसी भी समाज या वर्ग की हों, वे हमारी भी बेटियां हैं। उन्हें जाति या धर्म के आधार पर नहीं आंकना चाहिए। बेटी किसी की भी हो, हमें उसे अपनी बेटी मानना चाहिए। मसूद ने आगे कहा कि जो लोग इस तरह के अपराध करते हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। मैं पहले भी इसके पक्ष में था और आज भी हूं। आरिफ मसूद ने आगे कहा की किसी धर्म विशेष पर ये लोग क्यों सोचते हैं? एक धर्म की बच्ची हो या किसी जाति की, बच्ची तो बच्ची है।

संपादकीय

न्यायपालिका पर हमले

उप-राष्ट्रपति ने संसद को सर्वोच्च बताया है। यानी संसद कोई भी विधेयक पारित कर सकती है, जिसका न्यायिक परीक्षण नहीं होना चाहिए। इस तरह जगदीप धनखड़ ने अवरोध एवं संतुलन की संवैधानिक व्यवस्था को सिरे से नकारने की कोशिश की है। न्यायपालिका पर हमले जारी रखते हुए उप-राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने अब ये विवादास्पद बात कही है कि भारतीय व्यवस्था में संसद सर्वोच्च है। इस तरह उन्होंने अवरोध एवं संतुलन की संवैधानिक व्यवस्था को सिरे से नकारने की कोशिश की है। धनखड़ के मुताबिक संसद के ऊपर सिर्फ मतदाता हैं, जो संसद का चुनाव करते हैं। इस तर्क को आगे बढ़ाया जाए, तो उसका अर्थ निकलेगा कि निर्वाचित होने के बाद संसद कोई भी विधेयक पारित कर सकती है, जिनमें संविधान संशोधन बिल भी शामिल हैं। यह तर्क सीधे तौर पर संवैधानिक अदालतों के अस्तित्व को चुनौती है। इसलिए कि संवैधानिक अदालतों (सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट) को संविधान ने संवैधानिक प्रावधानों की व्याख्या का अधिकार दिया है। इसके तहत सुप्रीम कोर्ट को संसद से पारित विधेयकों के परीक्षण का अधिकार भी हासिल है। भारत में न्यायशास्त्र के विकास के साथ सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के बुनियादी ढांचे का सिद्धांत विकसित किया है। इस ढांचे से हेरफेर करने वाले कानूनों को रद्द कर देने का अधिकार उसे हासिल है। फिर संविधान के अनुच्छेद 142 में प्रावधान है कि 'न्याय को पूर्णता प्रदान करने के लिए' सुप्रीम कोर्ट आदेश जारी कर सकता है। यह आदेश सारे देश में लागू होगा। जहां तक सर्वोच्चता का सवाल है, तो भारतीय संवैधानिक व्यवस्था में शक्तियों के अलगाव का सिद्धांत अपनाया गया है। इसके तहत कोई राजकीय संस्था सर्वोच्च नहीं है। हर संस्था को ऐसे अधिकार हैं, जिससे वह अवरोध एवं संतुलन का दायित्व निभा सके। अवरोध एवं संतुलन की व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि हर संस्था संवैधानिक दायरे में काम करे। इस तरह अधिनायकवाद की प्रवृत्तियों पर नियंत्रण बना रहता है। उप-राष्ट्रपति खुद एक बड़े संवैधानिक पद पर हैं, जहां उनसे भी ऐसी भूमिका की अपेक्षा की जाती है। मगर हाल के भाषणों में उन्होंने 'न्याय को पूर्णता प्रदान करने' संबंधी सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को चुनौती दी है और अब उन्होंने संसद की सर्वोच्चता का एलान किया है। उनके इस नजरिए से राष्ट्रीय जनमत के एक बड़े हिस्से में कौतूहल देखा गया है। ये सवाल उठा है कि आखिर धनखड़ ऐसे दावे क्यों कर रहे हैं?

छात्रों के विरोध अश्लील और असभ्य

प्रियंका सौरभ

दिल्ली विश्वविद्यालय, जिसे भारत के सबसे प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में गिना जाता है, हाल में एक अजीबोगरीब और प्रतीकात्मक विरोध का केंद्र बना। कुछ छात्रों ने क्लासरूम की दीवारों पर गोबर लीपा और प्रिंसिपल के घर के बाहर भी गोबर फेंक दिया।

यह कोई फिल्मी सीन नहीं था, न ही कोई ग्रामीण उत्सव-यह था एक गुस्से से भरा राजनीतिक वक्तव्य। यह घटना न केवल ध्यान खींचती है, बल्कि कई गहरे और असहज सवाल भी खड़े करती है- क्या विविद्यालय सिर्फ सत्ता का विस्तार बन चुके हैं? क्या छात्र आंदोलन केवल 'विचारों' से नहीं, अब 'गंध' से भी संवाद करने लगे हैं?

यह विरोध दिल्ली यूनिवर्सटिी के साउथ कैम्पस के एक कॉलेज में हुआ जहां छात्रों ने गोबर लीप कर क्लासरूम को 'पवित्र' करने की कोशिश की। दरअसल, 'पवित्रता' का यह तंज था-एक ऐसे सिस्टम पर, जिसे छात्र 'अपवित्र' मानते हैं। कहा गया कि यह विरोध जातिगत भेदभाव, एक दलित प्रोफेसर के साथ अन्याय, और प्रशासन की असंवेदनशीलता के खिलाफ था। छात्रों ने न सिर्फ कक्षाओं को गोबर से लीपा, बल्कि प्रिंसिपल के घर तक जाकर वहां भी प्रदर्शन किया।

भारत में गोबर का उपयोग सदियों से पवित्रता, शुद्धता और स्वदेशी जीवन शैली के प्रतीक के रूप में होता आया है। लेकिन इस मामले में इसका प्रयोग गहराई से व्यंग्यात्मक था। यह ऐसा प्रतीक था जो न केवल सत्ता की 'पवित्रता' को उलट देता है, बल्कि दिखाता है कि छात्र अब विरोध के पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़कर सत्ता की भाषा को उसके ही प्रतीकों से जवाब दे रहे हैं। यह विरोध दरअसल उस छद्म सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर चोट करता है जो गाय, गोबर और गंगा जल को पवित्र मानता है, लेकिन दलित, आदिवासी व वंचित समुदायों की पीड़ा को अपवित्र विषय मानता है।

भारतीय विविद्यालय धीरे-धीरे उस विचारभूमि से हटते जा रहे हैं, जहां असहमति को प्रोत्साहन मिलता था। आज यदि कोई छात्र या प्रोफेसर सत्ता के खिलाफ बोलता है, तो उसे 'राष्ट्रविरोधी', 'गद्दार', या 'विकास-विरोधी' कहा जाने लगता है। कैम्पस अब लोकतांत्रिक संवाद के केंद्र नहीं, बल्कि डर के घेरे बनते जा रहे हैं। छात्रों के इस कदम को केवल 'असभ्यता' कह कर खारिज करना आसान है, लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि यह घटना उस निराशा और हताशा की उपज है जो वर्षों से भीतर ही भीतर सुलग रही है। जब संवाद के सारे रास्ते बंद कर दिए जाते हैं, तो प्रतीकात्मक और चौंकाने वाले कदम ही विकल्प बनते हैं।

यह विरोध 'हिंसक' नहीं था, लेकिन 'सुगंधित' भी नहीं था। निश्चित रूप से गोबर से दीवारें लीपना किसी भी संस्थान के लिए अनुशासनहीन हरकत मानी जाएगी। लेकिन यह भी सोचना होगा कि जब छात्र अपनी बात कहने के लिए इतना असामान्य तरीका अपनाते हैं, तो समस्या छात्रों में नहीं, व्यवस्था में भी है। वे किस हद तक खुद को असहाय और अनसुना समझते हैं, यह इस घटना से जाहिर होता है। अलबत्ता, यह विरोध मानसिक और सांस्कृतिक असहजता पैदा करने वाला जरूर था। छात्रों का प्रदर्शन प्रिंसिपल के निजी घर तक पहुंचना न केवल प्रतीकात्मक था, बल्कि दर्शाता है कि छात्रों को अब संस्थागत दायरे में न्याय की उम्मीद नहीं रही। यह खतरनाक संकेत है-न केवल शिक्षा व्यवस्था के लिए, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए भी।

मीडिया ने इस घटना को सनसनीखेज ढंग से दिखाया -'छात्रों ने लीपा गोबर!', 'गाय के नाम पर राजनीति फिर से!'-लेकिन दुर्भाग्यवश किसी ने यह नहीं पूछा कि छात्र ऐसा क्यों कर रहे हैं? किस घटना ने उन्हें इस हद तक पहुंचाया? किसने संवाद के रास्ते बंद किए? मीडिया अक्सर लक्षणों पर बहस करता है, लेकिन बीमारी की जड़ तक नहीं जाता। सत्ता जब गाय और गोबर को संस्कृति का हिस्सा मान कर उन्हें नीतियों में शामिल करती है-जैसे गोबर आधारित उत्पादों को बढ़ावा देना, पंचगव्य को चिकित्सा बताना-तब वह 'धर्म-सम्मत' होता है।

लेकिन जब यही प्रतीक छात्रों के विरोध में आते हैं, तो वे 'अश्लील' और 'असभ्य' बन जाते हैं। यही सत्ता का दोहरापन है। छात्रों का विरोध सत्ता के इस पाखंड की पोल खोलता है-दिखाता है कि सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग केवल सत्ता के लिए सुरक्षित नहीं है, बल्कि जनता भी उन्हें विरोध के औजार बना सकती है। इस घटना के बहाने जरूरी हो गया है कि विविद्यालयों में संवाद की संस्कृति को फिर से मजबूत किया जाए। यह घटना प्रतीकात्मक चेतावनी है-शिक्षा का मंदिर यदि सत्ता की चौकी बन जाए, तो छात्र वहीं पर 'शुद्धि यज्ञ' करने लगते हैं। गोबर का यह विरोध हमें याद दिलाता है कि लोकतंत्र में असहमति की गुंजाइश बनी रहनी चाहिए -वरना दीवारें ही नहीं, सोच भी गंधाने लगती है।

शब्द सामर्थ्य -034

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. घुमाव-फिराव वाला, आड़ा-तिरछा, जो कठिन हो 3. कुशलता, दक्षता, विशेषज्ञता 6. लोग, प्रजा 7. सीता, जनकनंदनी 9. सुंदर, कामना करने योग्य 10. क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना, जोश में आना, क्रोधातिरेक में चेहरे का लाल होना 13. अधीनता, मातहती, वश 14. दबाव, भार, वजन 16. हद, मर्यादा 18. प्रमाण-पत्र, प्रमाणिक कथन या बात 19. पछताना (मुहा.) 21. अनुचित मिश्रण, मिलावट 22. विफल, बेहोश, बौखलाया हुआ।

ऊपर से नीचे

1. सहारा, आश्रय, प्रतिज्ञा, संकल्प 2. परिश्रम 4. रात, रात्रि, निशा 5. पुत्र, बेटा 8. मूल्य, दाम 9. कपड़े का मोटा परदा 11. संदेश भेजना, उच्चारण कराना, कहलवाना 12. मृतकों को जीवित और रोगियों को स्वस्थ कर देने वाला व्यक्ति, प्रेमपात्र की संज्ञा 14. देने की क्रिया, खैरात 5. कुमार्गी, दुराचारी 17. मस्तक, माथा, ललाट 18. प्रश्न, समस्या 20. सहायता, सहारा 21. पशुओं को खिलाने वाली हरी पत्तियां, तृण, तिनका।

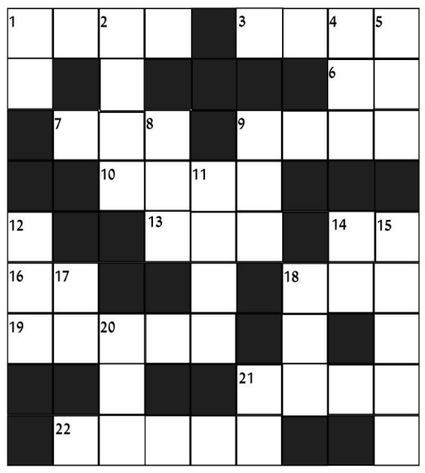

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 033 का हल

ज	द्दो	जे	ह	द	■	स	पू	त
ल	■	ब	ल	वा	न	■	■	द
म	ह	क	■	खा	म	खां	■	बी
ग्न	■	त	ल	ना	■	स	फ	र
■	म	रा	■	■	■	ना	टा	■
■	हि	■	स	■	■	■	फ	न
■	ला	ज	वा	ब	■	म	ट	र
मां	■	ग	■	सं	त	ति	■	भ
■	मा	त	ह	त	■	■	प	क्षी

सू- दोकू क्र.034

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.033 का हल

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2

व्यंग्यः आस्तीन में घर हैं जिनके

विवेक रंजन श्रीवास्तव

सोशल मीडिया में खालिस भारतीय 'विदेशी भक्त' और उनकी दोहरे चरित्र देखने लायक हैं। भारत के डिजिटल जंगल में इस नई प्रजाति का उदय हुआ है , जिनकी जुबान 'वैश्विक नागरिकता' का राग अलापती है, पर भारत की आस्तीन में छुपा उनका 'घर' किसी और ही महाद्वीप का पता बताता है। ये वो शख्सियतें हैं जो भारत की मिट्टी में पलती-बढ़ती हैं, पर उनकी नज़रें हमेशा विदेशी स्टैंडर्ड्स के पैमाने से ही देश को नापती हैं। अगर कोई भारत सरकार की आलोचना करे, तो ये उसकी पीठ थपथपाने को तैयार मिलते हैं। यदि सरकार के समर्थन में कुछ लिख दिया तो यह ब्रिगेड भक्त का टाइटिल देने में देर नहीं लगाती , इस तरह वे स्वयं को कथित सेक्युलर साबित करने में जुट जाते हैं। विदेशी सरकारों के मुंह से भारत पर कोई टिप्पणी निकले, तो ये उसे सच्चाई का आईना घोषित कर देते हैं। आस्तीनों में बसे इनके 'घर' की नींव तो शायद , न्यूयॉर्क या जेनेवा की मिट्टी से बनी है! इनके रहने वाली बांबी भीतर ही भीतर पाकिस्तान और बंगलादेश तक जुड़ी हुई है। इनका व्यंग्य-शस्त्रागार बेहतरीन होता है। सरकार ने कोई नीति बनाई? तुरंत ट्विटर पर ट्रेंड करो- अरे, स्वीडन में ऐसा होता तो...। किसी भारतीय संस्था ने कोई उपलब्धि हासिल की? ..पर सिंगापुर में तो ये सालों पहले...। ये लोग कॉम्पेयर एंड डिस्पेयर के मास्टर हैं। इन्हें पता ही नहीं कि स्वीडन की आबादी भारत के एक छोटे राज्य जितनी है, या सिंगापुर का भूगोल चंडीगढ़ से छोटा है। पर इन्हें यथार्थ से क्या लेना-देना? इनका काम वर्चुअल एक्सपर्ट बनकर अपने ही देश को लताड़ना है। ये अभिव्यक्ति की आज़ादी की दुहाई देते हैं, पर इनकी परिभाषा में आज़ादी सिर्फ़ सरकार की आलोचना करने तक सीमित है। अगर कोई इनसे पूछे, भई, आप जिस देश को आइडियल मानते हो, वहाँ तो पुलिस प्रोटेस्टर्स पर घोड़े दौड़ाती है!

तो जवाब मिलता है वो अलग बात है, वहाँ की सरकार 'परफेक्ट' है। यानी, इनके लिए आलोचना का अधिकार सिर्फ़ भारत के लिए रिज़र्व्ड है। बाकी दुनिया?, उन्हें तो समझने की ज़रूरत है! ये विदेशी मीडिया के प्रति 'हैलो प्रिंसिपल' सिंड्रोम से ग्रस्त होते हैं। ये अंग्रेजी जानते हैं, विदेशी मीडिया के प्रति बेहिसाब लगाव रखते हैं। किसी विदेशी मीडिया ने भारत पर कोई रिपोर्ट छापी, तो ये उसे गॉस्पल मानकर शेयर करते हैं। पर अगर भारतीय मीडिया विदेशों में हो रहे अत्याचारों की बात करे, तो ये उसे प्रोपेगैंडा बताते हैं। इनके मुताबिक़, ऑब्जेक्टिविटी की मोहर सिर्फ़ विदेशी चैनलों पर लगती है। और हाँ, अगर कोई भारतीय इस दोहरे मापदंड पर सवाल उठाए, तो वह अंधभक्त कहा जाता है! इनके ट्वीट्स और पोस्ट्स देखकर लगता है मानो भारत की हर समस्या का समाधान विदेशी सलाहकारों के पास है। गंगा प्रदूषण? यूरोपियन एक्सपर्ट्स को बुलाओ! किसान आंदोलन? यूएन को हस्तक्षेप करना चाहिए! पर इन्हें यह नहीं सूझता कि जिन देशों को ये रोल मॉडल मानते हैं, उन्होंने अपनी समस्याएँ खुद सुलझाई थीं। स्वदेशी समाधानों पर भरोसा? अरे, वो तो रिग्रेसिव है! वेस्टर्न वैलिडेशन चाटुकारिता का नया अवतार , ये लोग भारत के सॉफ्ट पावर पर तब तक शक करते हैं, जब तक कि कोई विदेशी उसे वैलिडेट न कर दे।

राशिफल

मेष मेष राशि: आज का दिन आपके लिए खास होने वाला है। आज अपने व्यक्तित्व और स्वभाव में लाया गया परिवर्तन बेहतरीन रहेगा। सामाजिक तथा पारिवारिक लोगों की तरफ से विशेष मान-सम्मान मिलेगा। घर में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के आने से किसी खास मुद्दे पर सकारात्मक विचार विमर्श होगा। आज आलस को अपने ऊपर हावी न होने दें। इससे आपकी कार्य क्षमता प्रभावित हो सकती है। आज अपनी योजनाओं तथा गतिविधियों को सीक्रेट रखें। आज कारोबारी परेशानियों का काफी हद तक निवारण होगा।

वृषभ आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज किसी अपरिचित व्यक्ति से ज्यादा घुलने-मिलने से आपको बचना चाहिए। आज अपनी खास योजना किसी से भी शेयर न करें। कभी-कभी बहुत ज्यादा आत्म निर्भर होना और ईगो की भावना रखने से आपको समस्या हो सकती है। आज माता जी की सलाह से लिया गया निर्णय आगे चलकर लाभदायक साबित होगा। आपकी धर्म-कर्म और आध्यात्मिक कार्यों में आस्था बनी रहेगी। छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

मिथुन आज का दिन आपके अनुकूल रहने वाला है। आज आपके व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव आएगा और रहन-सहन के प्रति अधिक सजग रहना दूसरों के बीच आकर्षण का केंद्र बनेगा। आज किसी रुके हुए काम को पूरा करने के लिए उचित समय है। किसी भी योजना को क्रियान्वित करने से पहले घर के सदस्यों की सलाह जरूर लें। लेनदेन के मामलों को लेकर सावधानी बरतें। आज यात्रा का विचार बन रहा है, तो अपने सामान का ध्यान रखें। नौकरी में कार्यभार बढ़ने की वजह से व्यस्त रहेंगे। इसलिए व्यवस्थित रूप से अपने कार्यों की प्राथमिकताओं पर ध्यान दें।

कर्क आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। आज व्यवसायिक कार्यप्रणाली में बेहतर सुधार आने से आपके कार्य समय से पूरे होते रहेंगे। यह समय रुकी हुई पेमेंट को क्लेक्ट करने तथा आर्थिक स्थितियों को मजबूत करने के लिए उत्तम है। आज नौकरी कर रहे लोगों को फोन द्वारा किसी उच्चाधिकारी से महत्वपूर्ण सूचना मिल सकती है। आज आपका पारिवारिक सदस्यों के साथ सुखद समय बीतेगा तथा घर में मेहमानों के आगमन से चहल-पहल भरा खुशनुमा माहौल रहेगा। स्पोर्ट से जुड़े लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा मौका मिलेगा।

सिंह आज का दिन फेवरेबल रहने वाला है। आज किसी भी काम को करने से पहले उससे संबंधित जानकारी हासिल करने से ज्यादा सफलता मिलेगी। आप अपनी प्रतिभा को पहचाने और पूरी ऊर्जा के साथ अपनी दिनचर्या व कार्यप्रणाली को व्यवस्थित रखेंगे। आज अपनी योजनाओं व गतिविधियों को किसी के साथ भी शेयर ना करें। छात्र आज किसी टॉपिक को समझने में सफल होंगे। मल्टीनेशनल कंपनी में कार्यरत लोगों को आज प्रमोशन मिलने के योग बने हुए है। कुल मिलाकर आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

कन्या आज का दिन आपके लिए नयी उमंग से भरा रहने वाला है। आज आस-पास के लोगों के लिए आपका व्यवहार अच्छा रहेगा, आपके अंदर नयी ऊर्जा का संचार होगा। आज आपको जो भी काम दिया जायेगा उसे आप अच्छे से करेंगे। बिजनेस में आपको मेहनत के अच्छे नतीजे हासिल होंगे। आज आपको अपने गुस्से पर कंट्रोल रखना होगा अन्यथा बना बनाया काम दूबारा करना पड़ सकता है। परिवार के साथ आज मूवी देखने की प्लानिंग करेंगे। कान से जुड़ी समस्या के लिए आज किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा सकते है।

तुला आज का दिन आपके लिए सुनहरा रहने वाला है। आज का समय उपलब्धियों वाला है। आज अपनी पूरी मेहनत व ऊर्जा अपने कार्यों के प्रति लगायेंगे। आज आपको ध्यान रखना होगा कि आपका प्रोजेक्ट तय समयानुसार पूरा हो जाये। आज आपको अपने गुस्से व आक्रोश पर नियंत्रण रखना जरूरी है। आज जीवनसाथी तथा पारिवारिक सदस्यों का पूर्ण सहयोग रहेगा। आपसी रिश्ते सौहार्दपूर्ण बने रहेंगे। बिजनेस के कामों में सुधार होगा। स्टाफ और कर्मचारियों का सहयोग बना रहेगा। ऑफिस में उच्चाधिकारियों के साथ रिश्ते और अधिक मजबूत होंगे।

वृश्चिक आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज आप किसी व्यक्ति विशेष के बारे में सोच कर रोमांचित रहेंगे। आज आपको कुछ नए अनुभव मिल सकते हैं। आज आपके लिए घर का सदस्य कुछ खरीद सकता है जिसे पाकर आप आनन्दित होंगे। आज वर्कस्पेस पर सीनियर्स और बॉस के द्वारा कुछ बताया जा रहा है तो उसे गंभीरता से लें, और अपनी कमियों को जानकर उसे सुधारने का प्रयास करें। आज बिजनेस की प्रगति के लिए फाइनेंशियल प्लानिंग करेंगे।

धनु आज का दिन आपके लिए शानदार रहने वाला है। आप जानते हैं कि आपका काम मुश्किल नहीं है बस आपको हौसला बनाकर रखना है। करियर में सुधार करने के लिए जिन बातों में बदलाव करना है, वह स्पष्ट रूप से जानने की कोशिश करें। आपके कामों की गति बढ़ेगी, जिससे आपको अच्छा धन लाभ होगा 7 दोस्तों के साथ आपकी दोस्ती और मजबूत होगी। नौकरी में कार्यरत लोगों को बड़ी उपलब्धि मिलने से खुशी होगी। छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

मकर आज का दिन आपके लिए बेहतर रहने वाला है। आज आपके परिवार में आपसी सौहार्द बना रहेगा। प्रोफेशनल लाइफ में मामले स्पष्ट रखें। व्यापारिक दृष्टिकोण से आज सब कुछ ठीक रहेगा। आपकी इनकम अच्छी रहेगी। आपके धन प्राप्ति के मार्ग में यदि कुछ समस्याएं आ रही है, तो वह आज दूर होगी। आज परिवार का संपत्ति संबंधित मामला सुलझ सकता है, जिसमें आपको वरिष्ठ सदस्यों की मदद भी मिलेगी। भाई व बहनों का सहयोग आपको भरपूर मात्रा में मिलेगा और मां की किसी इच्छा के पूरा होने से आप खुश रहेंगे ।

कुंभ आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। लोगों के मन में आपके प्रति सम्मान का भाव रहेगा यह देखकर आपको खुशी होगी। आज आप घर के कामों में अपनी माँ की मदद करेंगे और भविष्य को लेकर आप बातचीत भी करेंगे। आज आप अपने कामों में जल्दबाजी दिखाने से बचेंगे तो आप समस्या से बच जायेंगे। आपका मित्र आपसे आर्थिक मदद मांग सकता है जिसकी आप अपनी क्षमता के अनुसार मदद करेंगे। संतान को यदि आप कोई जिम्मेदारी देंगे, तो भी वह उन पर खरा उतरेंगे। आज आपका दाम्पत्य जीवन शानदार रहने वाला है।

मीन आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। आपका जो उद्देश्य है, उससे जुड़े विचारों पर ध्यान देने की कोशिश करें। अन्य लोगों की मदद से आज आपके रुके कार्य पूरे हो जायेंगे। मित्रों के साथ बिताए हुए समय की वजह से आनंद मिलेगा। आज आपको संतान की संगति की ओर विशेष ध्यान देना होगा। आज आपकी किसी संपत्ति का सौदा हो सकता है। आपका किसी नए वाहन को खरीदने का सपना पूरा होगा। लवमेट आज कहीं घूमने का प्लान बनायेंगे।

(1 मई अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस पर विशेष)

अब मजदूर का बच्चा मजदूर नहीं रहेगा, श्रम विभाग द्वारा किए जा रहे विशेष प्रयास

छगन लोन्हारे

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा श्रमिकों एवं उनके परिजनों की बेहतरी के लिए कई योजनाएं संचालित की जा रही है। इन योजनाओं के माध्यम से श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए लगातार आर्थिक मदद दी जा रही है। श्रम विभाग के तीनों मंडल - छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार मंडल, छ.ग. असंगठित कर्मकार राज्य सामाजिक सुरक्षा मंडल एवं छ.ग. श्रम कल्याण मंडल के माध्यम से योजनाओं का सफल क्रियान्वयन हो रहा है। इसी का परिणाम है कि बीते सवा साल में श्रमिकों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से लगभग 5 करोड़ रूपए डीबीटी के माध्यम से उनके खाते में अंतरित किए जा चुके हैं।

प्रदेश के श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन का कहना है कि प्रदेश में विष्णु देव सरकार के सुशासन में अब मजदूर का बच्चा मजदूर नहीं रहेगा। श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों के हितों में अनेक कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है। इनमें प्रमुख रूप से मुख्यमंत्री नौनिहाल छात्रवृत्ति योजना, मिनीमाता महतारी जतन योजना, मुख्यमंत्री श्रमिक औजार किट योजना, मुख्यमंत्री नोनी बाबू मेधावी शिक्षा प्रोत्साहन योजना, निर्माण श्रमिकों के बच्चों हेतु निःशुल्क गणवेश एवं पुस्तक कॉपी हेतु सहायता राशि योजना, निर्माण श्रमिकों के बच्चों हेतु उत्कृष्ट खेल प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिक आवास सहायता योजना, शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न योजना संचालित की जा रही है। प्रदेश के श्रम मंत्री देवांगन का कहना है कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच है कि हर हाथ को काम इस दिशा में प्रदेश के वाणिज्य उद्योग एवं श्रम विभाग द्वारा हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। श्रम विभाग के लिए चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट में 255 करोड़ 31 लाख रूपए का प्रावधान किया गया है।

मजदूर दिवस दुनिया भर में मनाया जाता है। 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस या श्रमिक दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य मजदूरों के अधिकारों, सामाजिक न्याय और बेहतर कामकाजी परिस्थितियों के लिए संकल्प लेना है। यह दिन श्रमिकों के योगदान को याद करने और उनके संघर्षों को सम्मानित करने के लिए भी मनाया जाता है। यह दिवस वर्ष 1886 में शिकागो के हेमार्केट स्क्वायर में मजदूरों के विरोध प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा की याद में मनाया जाता है, जहां अनेक श्रमिकों ने 8 घंटे के कार्य दिवस की मांग की थी। सन् 1889 में, द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संगठन ने 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में घोषित किया था। इस दिन को मनाने का उद्देश्य मजदूरों के अधिकारों को सुनिश्चित करना, सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना और बेहतर कामकाजी परिस्थितियों के लिए आवाज बुलंद करना है। भारत में मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत 1923 में चेन्नई (मद्रास) से हुई थी। भारतीय संविधान निर्माण सभा के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर ने श्रमिकों के काम का समय 12 घंटे से घटाकर 8 घंटे किया। इसके अलावा उन्होंने महिलाओं को प्रसूति अवकाश की सुविधा उपलब्ध कराई।

श्रम विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार राज्य सामाजिक सुरक्षा मंडल के अंतर्गत अटल श्रम सशक्तिकरण योजना के लिए वर्ष 2025-26 के बजट में 125 करोड़ 10 लाख रूपए का प्रावधान किया गया है। इसी तरह वर्ष 2025-26 में पंजीकृत 2 लाख 26 हजार संगठित श्रमिकों के लिए राज्य शासन के अनुदान हेतु 6 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन का कहना है कि विष्णु देव सरकार की सोच है कि हर हाथ को काम मिले उसका उचित दाम मिले और हर पेट को अन्न मिले यह हमारी सरकार की आदर्श नीति है। इस नीति को क्रियान्वित करने हेतु राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री द्वारा शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न योजना प्रदेश के सभी जिलों में प्रारंभ करने की घोषणा की गई है, जिसके परिपालन में इस वर्ष 13 जिलों में 31 भोजन केंद्र प्रारंभ किए जा चुके हैं। जिसका विस्तार चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 में समस्त जिलों में किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा असंगठित क्षेत्र के कर्मकारों एवं निर्माण श्रमिकों के पंजीयन हेतु विकासखण्ड स्तर पर मोबाईल कैम्प लगाए जाने की पहल विभाग द्वारा की गई है। अब तक 4 हजार 705 मोबाईल कैम्प लगाए जा चुके हैं।

औद्योगिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा हेतु चालू वित्तीय वर्ष में 6 करोड़ 24 लाख 25 हजार रूपए का बजट प्रावधान किया गया है। श्रम विभाग के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा सेवाएं का मुख्य दायित्व श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को भी चिकित्सा हित लाभ उपलब्ध कराया जाता है। कर्मचारी राज्य बीमा सेवाएं के लिए 64 करोड़ 18 लाख रूपए का प्रावधान राज्य सरकार द्वारा किया गया है।

विधायक देवतालाब में किया वाटरशेड महोत्सव का शुभारंभ

पानी ही सबके जीवन का आधार है : विधायक श्री गौतम

रीवा,कासं.। वाटरशेड परियोजना द्वारा ग्राम मिसिरगवां में वाटरशेड महोत्सव का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विधायक देवतालाब एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री गिरीश गौतम ने वाटरशेड महोत्सव का शुभारंभ करते हुए कहा कि पानी सबके जीवन का आधार है। वाटरशेड मिशन के तहत धरती माता की कोख को जल से भरने के लिए जल संरक्षण के कार्य करायें। पानी का किसी भी तरह से दुरूपयोग न करें। फसलों में आवश्यकता के अनुसार पानी दें। सिंचाई के लिए धस्प्रकलर सिस्टम का उपयोग करें।

बारिश के पानी को संरक्षित करने के लिए तालाब, चेक डैम्प, स्टाप डैंम, पर्कुलेशन टैंक तथा अन्य जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण करायें। जल संरक्षण को आमजन का अभियान बनाये। वाटरशेड महोत्सव में मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों तथा आमजनता ने जल संरक्षण के लिए भूमिपूजन किया। समारोह में विधायक देवतालाब ने वाटरशेड परियोजना के विकास कार्यों का भूमिपूजन तथा लोकार्पण किया। समारोह में वाटरशेड यात्रा के तहत आयोजित जन जागरूकता की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि ने जल योद्धाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने जन जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर पंचायतों में भ्रमण के लिए रवाना किया। समारोह में जिला पंचायत सदस्य श्री देवेन्द्र शुक्ला, जनपद अध्यक्ष मऊगंज श्रीमती नीलम इन्द्रपाल सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री महेताब सिंह गुर्जर, जिला परियोजना अधिकारी वाटरशेड डॉ. संजय सिंह, सीईओ जनपद मऊगंज रामकुशल मिश्रा तथा बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

नीट यूजी परीक्षा 4 मई को कलेक्टर ने परीक्षा के संबंध में दिए निर्देश

किसी भी तरह का इलेक्ट्रानिक उपकरण और खाद्य पदार्थ ले जाना रहेगा प्रतिबंधित

रीवा,कासं.। निर्धारित 13 परीक्षा केन्द्रों में 4 मई, रविवार को एनटीए नीट यूजी की परीक्षा निर्धारित परीक्षा केन्द्रों में आयोजित की जा रही है। परीक्षा सुबह 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षार्थियों को परीक्षा शुरू होने से एक घंटा पहले परीक्षा केन्द्र पहुंचने के निर्देश दिए गए हैं। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा है कि नीट यूजी परीक्षा में शामिल होने वाले परीक्षार्थी अपने साथ एनटीए वेबसाइट से डाउनलोड किया गया प्रवेश पत्र, पोस्टकार्ड साइज की एक फोटो तथा पासपोर्ट आकार की दो फोटो अवश्य साथ लाएं। इसके साथ-साथ किसी एक अधिकृत फोटो पहचान पत्र की मूल तथा वैध प्रति लेकर आना आवश्यक है। पारदर्शी बोतल में पानी लेकर आने की अनुमति रहेगी।

कलेक्टर ने कहा है कि परीक्षा केन्द्र में जूते पहनने की अनुमति नहीं रहेगी लेकिन कम हील की सैण्डल अथवा चप्पल परीक्षार्थी पहन सकते हैं। कलेक्टर ने कहा है कि परीक्षा केन्द्र में किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, इयरफोन, माइक्रोफोन, पेजर, हीटबैण्ड आदि ले जाना पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। चश्मा, घड़ी, बेल्ट, कैप, हैण्डबैग, कैमरा, ब्रोसलेट तथा किसी भी तरह के खाद्य पदार्थ का ले जाना भी प्रतिबंधित रहेगा। अपारदर्शी बोतल में पानी ले जाने की अनुमति नहीं रहेगी। परीक्षार्थी हल्के कपड़े पहनें जिनकी आस्तीन लंबी न हों। फैंसी पाकेट, जिपर, बैज आदि लगा न हो। छात्राएं किसी भी तरह के गहने अथवा धातु की बनी वस्तुओं को न पहनें। फैंसी और कढ़ाईदार कपड़े भी न पहनें। परीक्षा में शामिल होने के लिए निर्धारित निर्देशों का पूरी तरह से पालन करें। परीक्षा के संबंध में सोशल मीडिया अथवा अन्य माध्यमों से फैलने वाली तथ्यहीन सूचनाओं और अफवाहों पर ध्यान न दें। अफवाहों की तत्काल पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दें। नीट यूजी परीक्षा में अनुचित साधनों और अपराधों के लिए पब्लिक एग्जामिनेशन अधिनियम 2024 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की जाएगी।

जल गंगा संवर्धन अभियान में लगातार हो रहा पानी को सहेजने का प्रयास

रीवा,कासं.। रीवा और मऊगंज जिले में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पानी को सहेजने के लिए जल संरक्षण से जुड़े निर्माण कार्य बड़े पैमाने पर किये जा रहे हैं। नगरीय निकायों में हैण्डपंपों मे रिचार्ज पिट बनाने तथा पक्के घरों वाटर हार्वेषस्टग सिस्टम लगाने का कार्य किया जा रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में चेक डैम, बोरी बांध खेत तालाब और अमृत सरोबरों का निर्माण किया जा रहा है। इस संबंध में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने बताया कि ग्राम पंचायत नीबा में दो खेत तालाबों का निर्माण किया जा रहा है। नगर परिषद मऊगंज में अभियान के तहत मऊकूप की साफ सफाई तथा पेयजल की पाइप लाइन की मरम्मत का कार्य किया गया। नगर परिषद के रानीतालाब तथा सुंदर पुरवा तालाब में साफ सफाई का कार्य किया गया। नगर परिषद डभौरा द्वारा 14 हैण्डपंपों में सुधार कराकर उन्हें चालू कराया गया साथ ही रामजानकी मंदिर के पास नाले एवं लेदरी नदी में साफ सफाई का कार्य कराया गया। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने बताया कि जल संरक्षण के वन विभाग में घिनौचीधाम के जल स्त्रोतों की साफ सफाई करायी। इससे वन्य प्राणियों और पशु-पक्षियों को स्वच्छ जल उपलब्ध हो रहा है। हनुमना में भी तीन जल स्त्रोतों का साफ सफाई एवं सुधार का कार्य किया गया। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत 30 अप्रैल को ग्राम पंचायत अकौरी में मतीदहा नदी में साफ सफाई एवं गहरीकरण का कार्य किया गया।

जिले में अब तक समर्थन मूल्य पर 56551.48 टन हुई गेंहू की खरीद

रीवा,कासं.। किसानों को उनकी उपज का अधिकतम मूल्य देने के लिए निर्धारित समर्थन मूल्य पर पंजीकृत किसानों से गेंहू का उपार्जन किया जा रहा है। अब तक 10364 किसानों से 56551.48 मीट्रिक टन गेंहू का उपार्जन किया गया है। गेंहू उपार्जन की अंतिम तिथि 5 मई है। इस संबंध में जिला आपूर्ति अधिकारी कमलेश तांडेकर ने बताया कि उपार्जित गेंहू में से 27404 टन गेंहू का परिवहन करके सुरक्षित भण्डारण कराया जा चुका है। अब तक किसानों को 137 करोड़ 14 लाख रुपए की राशि स्वीकृत की गई है। गेंहू उपार्जन के लिए अब तक 17001 किसानों ने स्लॉट बुक किए हैं। उपार्जन के लिए सभी खरीदी केन्द्रों में पर्याप्त मात्रा में बारदाने उपलब्ध करा दिए गए हैं।

भारतीय संविधान में वेद और पुराणों की मूल भावना समाहित है : विधायक मऊगंज

रीवा,कासं.। जन अभियान परिषद द्वारा मऊगंज जिले के हनुमना में डॉ. अम्बेडकर के विचार और दर्शन पर आधारित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक मऊगंज श्री प्रदीप पटेल ने संगोष्ठी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विधायक श्री पटेल ने कहा कि भारतीय संविधान में वेद और पुराणों की मूल भावनाएं समाहित हैं। संविधान का निर्माण करने में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही। बाबा साहब सही अर्थों में महिलाओं और कमजोर वर्ग के सबसे बड़े शुभ चिंतक थे।

बाबा साहब के विचारों और प्रयासों से ही भारतीय संविधान में महिलाओं को समानता और सम्मान का अधिकार मिला है। भारतीय संविधान में प्राचीन परंपराओं और वेद पुराणों की मूल भावना को समाहित करने का श्रेय भी बाबा साहब को ही है। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के संभागीय समन्वयक प्रवीण पाठक ने कार्यक्रम के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए कहा कि जन अभियान परिषद द्वारा प्रदेश के सभी विकासखण्डों में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कृतित्व और व्यक्तित्व पर संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इनके माध्यम से बाबा साहब के विचारों और दर्शन को आमजनता तक पहुंचाया जा रहा है। संविधान की मूल भावना को समझने के लिए हमें डॉ. अम्बेडकर के विचारों को जानना आवश्यक है। संगोष्ठी में नगर परिषद अध्यक्ष हनुमना तथा जनपद सदस्य श्री गुड्डू सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में विकासखण्ड समन्वयक डॉ. रामानंद पटेल, अजय चतुर्वेदी, नवांकुर संस्थाओं और प्रेस्फुटन समिति के अधिकारी तथा आमजन उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

एटीएम से कैश निकालना होगा महंगा, इस दिन से बढ़ जाएंगे चार्ज

नई दिल्ली ,एजेंसी। अगर आप अक्सर अपने बैंक के अलावा दूसरे बैंकों के एटीएम से कैश निकालते हैं या बैलेंस चेक करते हैं, तो यह खबर आपके लिए महत्वपूर्ण है। अगले महीने की शुरुआत के साथ ही अब एटीएम से पैसे निकालना महंगा होने वाला है। भारतीय रिजर्व बैंक ने एटीएम इंटरचेंज फीस में बढ़ोतरी को मंजूरी दे दी है, और यह बढ़ा हुआ चार्ज 1 मई 2025 से लागू हो जाएगा। हर महीने की पहली तारीख को कई नियमों में बदलाव होते हैं और 1 मई से भी कई वित्तीय नियम बदलने जा रहे हैं, जिनमें एटीएम ट्रांजैक्शन से जुड़ा यह बदलाव भी शामिल है। अब होम बैंक नेटवर्क के बाहर किसी अन्य बैंक के एटीएम का उपयोग करने पर यूजर्स को पहले से अधिक शुल्क देना होगा। यह शुल्क मासिक मुफ्त लेनदेन सीमा समाप्त होने के बाद लागू होगा। केंद्रीय बैंक ने भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए यह शुल्क बढ़ाने की अनुमति दी है। रिपोर्टों के अनुसार, अब तक ग्राहक जब अपने बैंक के एटीएम के अलावा किसी दूसरे बैंक के एटीएम से मुफ्त सीमा के बाद पैसे निकालते थे, तो उन्हें प्रति ट्रांजैक्शन 17 रुपये का शुल्क देना पड़ता था। 1 मई से यह शुल्क बढ़कर 19 रुपये हो जाएगा। इसी तरह, दूसरे बैंक के एटीएम से बैलेंस चेक करने पर लगने वाला 6 रुपये का शुल्क भी बढ़कर 7 रुपये हो जाएगा। यह ध्यान रखना जरूरी है कि ये बढ़े हुए शुल्क तभी लागू होंगे जब आप अपने बैंक द्वारा तय की गई मुफ्त मासिक एटीएम लेनदेन सीमा पार कर लेते हैं। मेट्रो शहरों में, आप अपने बैंक के अलावा अन्य बैंकों के एटीएम से महीने में पांच बार मुफ्त लेनदेन कर सकते हैं, जबकि नॉन-मेट्रो शहरों में यह सीमा तीन लेनदेन की है। इस सीमा के बाद किए गए हर लेनदेन पर नया बढ़ा हुआ चार्ज लगेगा।

एसबीआई के साथ लैंड पोर्ट ऑथोरिटी ने साइन किया एमओयू, 18 लाख से ज्यादा लोगों को होगा फायदा

नई दिल्ली ,ए.। लैंड पोर्ट ऑथोरिटी ने देश के सबसे बड़े सरकारी बैंक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) साइन किया है। इसके तहत सरकारी बैंक लैंड पोर्ट ऑथोरिटी को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करेंगी, जिसमें फॉरेन एक्सचेंज, एक्सपोर्ट-इंपोर्ट, कार्ड पेमेंट सर्विसेज और कॉरपोरेट सैलेरी पैकेज शामिल हैं। इससे 18 लाख से ज्यादा लोगों को फायदा होगा। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के चीफ जनरल मैनेजर देबाशीष मिश्रा ने बताया कि यह सभी बैंकिंग सर्विसेज लैंड पोर्ट ऑथोरिटी के एंट्री और एग्जिट पॉइंट्स पर प्रदान की जाएंगी। फिलहाल लैंड पोर्ट ऑथोरिटी के पास 15 एंट्री और एग्जिट पॉइंट्स हैं और इनमें 11 और जुड़ने वाले हैं। आगे चलकर बैंक इसके हिसाब से ही अपनी सेवाओं का विस्तार करेगा। उन्होंने आगे कहा कि लैंड पोर्ट ऑथोरिटी के जरिए करीब 18 लाख लोग हमारे देश से बाकी देशों जैसे नेपाल, भूटान और बांग्लादेश जाते हैं। बैंक इन सभी लोगों को जरूरी बैंकिंग सेवाएं प्रदान करेगा। एसबीआई के शीर्ष अधिकारी ने आगे बताया कि हमारे पास लैंड पोर्ट ऑथोरिटी के आस-पास 11 ब्रांच हैं और आगे अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए नई ब्रांच या बैंकिंग आउटलेट खोलेंगे। मिश्रा के मुताबिक, बैंक की योजना अगले छह महीने में पश्चिम बंगाल में बांग्लादेश सीमा पर मौजूद पेत्रापोल और बिहार में नेपाल सीमा पर मौजूद रक्सौल समेत तीन एंट्री और एग्जिट पॉइंट्स को कवर करने की है। जहां से 80 प्रतिशत लोग आते-जाते हैं। मिश्रा ने आगे बताया कि हम फिजिकल के साथ डिजिटल बैंकिंग सेवाएं भी लोगों को प्रदान करेंगे, जिसमें नेट बैंकिंग, फोन बैंकिंग, डेबिट-क्रेडिट कार्ड, फॉरेन ट्रैवल कार्ड और पीओएस भी शामिल होगा। इससे इलाके के लोगों को वन-स्टॉप बैंकिंग सॉल्यूशन भी मिलेगा। एसबीआई देश का सबसे बड़ा सरकारी बैंक है। इसके पास 50 करोड़ से अधिक ग्राहक हैं और 22,500 से अधिक ब्रांचों के साथ इसकी उपस्थिति पूरे देश में है।

कोलकाता ने रोमांचक मुकाबले में दिल्ली को हराया

सुनील नारायण बने प्लेयर ऑफ द मैच

नई दिल्ली,एजेंसी। कोलकाता नाइट राइडर्स ने दिल्ली कैपिटल्स को आईपीएल 2025 के 48वें मैच में 14 रनों से हरा दिया है. इस मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स ने पहले खेलते हुए 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 209 रन बनाए. दिल्ली कैपिटल्स जीत के लिए मिले 210 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट खोकर सिर्फ 190 रन बना पाई और 14 रनों से मैच हार गई.

केकेआर से जीत के लिए मिले 210 रनों के लक्ष्य का पीछा करने के लिए दिल्ली की ओर से फाफ डु प्लेसिस और अभिषेक पोरेल पारी की शुरुआत करने के लिए आए. अभिषेक 4, करुण नायर 15, केएल राहुल 7, ट्रिस्टन स्टब्स और आशुतोष शर्मा 7 रन बनाकर पवेलियन लौट गए. दिल्ली कैपिटल्स के लिए सबसे ज्यादा रन फाफ डु प्लेसिस ने बनाए. उन्होंने 45 बॉल में 7 चौके और 2 छक्कों की मदद से 62 रनों की पारी खेली. उनके अलावा कप्तान अक्षर पटेल ने भी 23 बॉल में 4 चौके और 3 छक्कों के साथ 43 रनों की तूफानी पारी खेली. अंत में टीम के लिए विप्रज निगम ने भी 19 बॉल में 5 चौके और 2 छक्कों के साथ 38 रनों की तूफानी पारी खेली लेकिन अपनी टीम को जीत दिलाने में नाकामयाब रहे. कोलकाता के लिए सुनील नारायण ने 4 ओवर में 23 रन देकर 3 विकेट चटकाए. उनके अलावा वरुण चक्रवर्ती ने 2 विकेट हासिल किए. अनुकूल रॉय और वैभव अरोड़ा को 1-1 विकेट हासिल हुआ. इससे पहले कोलकाता नाइट राइडर्स ने टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए शानदार प्रदर्शन किया. केकेआर के लिए अंगकृष रघुवंशी ने 32 बॉल में 3 चौके और 2 छक्कों की मदद से सबसे ज्यादा 44 रनों की पारी खेली. उनके अलावा रिंकू सिंह ने 25 बॉल में 3 चौके और 1 छक्के के साथ 35 रनों का योगदान दिया. रहमानुल्लाह गुरबाज़ और अजिंक्य रहाणे ने 26-26 रनों की पारी खेली जबकि सुनील नारायण ने 27 रन बनाए. इस सभी बल्लेबाजों के योगदान के चलते केकेआर ने 209 रन बनाए. दिल्ली कैपिटल्स की ओर से मिचेल स्टार्क ने 4 ओवर में 43 रन देकर 3 विकेट हासिल किए. उनके अलावा विप्रज निगम और कप्तान अक्षर पटेल को 2-2 विकेट हासिल हुए जबकि एक विकेट दुष्मंथा चमीरा को भी मिला. मुकेश कुमार और कुलदीप यादव दिल्ली के लिए खाली हाथ रहे।

आरबीआई ने इंडसइंड बैंक परिचालन की निगरानी के लिए कार्यकारी समिति को दी मंजूरी

नई दिल्ली ,एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने इंडसइंड बैंक के परिचालन की निगरानी के लिए एक अंतरिम समिति के गठन को मंजूरी दे दी है। यह समिति एक अंतरिम अवधि के लिए बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के कर्तव्यों, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का निर्वहन करेगी, जब तक कि एक स्थायी सीईओ की नियुक्ति नहीं हो जाती। बैंक ने बुधवार को यह जानकारी दी। यह कदम इंडसइंड बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ सुमंत कठपालिया द्वारा डेरिवेटिव अकाउंटिंग में चूक को लेकर अपने पद से इस्तीफा देने के बाद उठाया गया है, जिससे निजी क्षेत्र के बैंक की नेटवर्थ में गिरावट आई है।

स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में बैंक ने बताया कि बोर्ड की एक निगरानी समिति की देखरेख में सौमित्र सेन (उपभोक्ता बैंकिंग प्रमुख) और अनिल राव (मुख्य प्रशासनिक अधिकारी) वाली समिति, बैंक के दिन-प्रतिदिन के मामलों का प्रबंधन करेगी। इस निरीक्षण समिति की अध्यक्षता बोर्ड के अध्यक्ष करेंगे और इसमें ऑडिट समिति; मुआवजा, नामांकन और पारिश्रमिक समिति और जोखिम प्रबंधन समिति के अध्यक्ष शामिल होंगे। एक्सचेंज फाइलिंग के अनुसार, आरबीआई की मंजूरी के आधार पर, बोर्ड ने बैंक के संचालन की देखरेख के लिए कार्यकारी समिति का गठन किया है। यह समिति बोर्ड की निरीक्षण समिति की देखरेख और मार्गदर्शन में बैंक के नए एमडी और सीईओ के कार्यभार संभालने तक या मौजूदा एमडी और सीईओ के कार्यमुक्त होने की तिथि से 3 महीने की अवधि तक कार्य करेगी। बैंक ने कहा कि वह शासन के उच्च मानकों को बनाए रखते हुए अपने संचालन की स्थिरता और निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रहा है। बुधवार को शुरुआती कारोबार में इंडसइंड बैंक के शेयर में गिरावट आई। एक स्वतंत्र ऑडिट द्वारा बैंक के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो में अकाउंटिंग विसंगतियों का पता चलने के बाद बैंक के डिप्टी सीईओ अरुण खुराना ने भी अपना पद छोड़ दिया है। बैंक के बोर्ड द्वारा नियुक्त एक पेशेवर फर्म द्वारा की गई जांच के निष्कर्ष 26 अप्रैल को प्रस्तुत किए गए। ऑडिट रिपोर्ट ने पुष्टि की कि गलत अकाउंटिंग प्रैक्टिस के कारण 31 मार्च, 2025 तक बैंक के प्रॉफिट और लॉस अकाउंट पर 1,959.98 करोड़ रुपए का प्रतिकूल संचयी प्रभाव पड़ा।

दुष्मंथा चमीरा बने सुपरमैन, हवा में उड़ते हुए पकड़ा हैरतअंगेज कैच

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2025 का 48 वां मुकाबला दिल्ली कैपिटल्स और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में खेला जा रहा है. इस मैच में श्रीलंका के तेज गेंदबाज दुष्मंथा चमीरा जो दिल्ली कैपिटल्स की ओर से आईपीएल में खेल रहे हैं, उन्होंने सभी को हैरान कर दिया. चमीरा ने मैदान पर मौजूद सभी दर्शकों को दंग कर दिया.

दरअसल, दुष्मंथा चमीरा ने दिल्ली और कोलकाता के बीच खेले जा रहे मैच में एक हैरतअंगेज कैच पकड़ा जो सोशल मीडिया पर देखते ही देखते वायरल हो गया. फैंस कमेंट कर इसे कैच ऑफ द टूर्नामेंट बता रहे हैं. चमीरा के इस कैच को जिसने भी देखा वो पूरी तरह से हैरान रह गया. बता दें कि, मिचेल स्टार्क कोलकाता नाइट राइडर्स की पारी का अंतिम ओवर डालने के लिए आए. उन्होंने इस ओवर की चौथी गेंद अनुकूल रॉय को यॉर्कर लेंथ डालने की कोशिश की लेकिन गेंद सही लाइन और लेंथ पर नहीं गिरी. इस गेंद को बाएं हाथ के बल्लेबाज रॉय ने फ्लिक कर दिया. बॉल लगभग बाउंड्री लाइन के बाहर पहुंचने ही वाली थी कि दुष्मांता चमीरा ने हवा में उड़ते हुए एक हाथ से शानदार कैच पकड़ लिया. इस कैच को लेने के बाद उन्हें खुद यकीन नहीं हुआ की उन्होंने कैच पकड़ लिया है. जब स्टार्क को पता चला की चमीरा ने सफलतापूर्वक कैच को पकड़ लिया है तो उन्होंने विकेट लेने का जश्न मनाया. इस शानदार कैच के साथ ही अनुकूल रॉय शून्य के स्कोर पर पवेलियन लौट गए. इस मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स ने पहले खेलते हुए 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 209 रन बनाए. दिल्ली कैपिटल्स की टीम जीत के लिए मिले 210 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए अब तक 11 ओवर में 3 विकेट खोकर 110 रन बना चुकी है।

दिव्यांग बच्ची से दुष्कर्म के दोषी को आजीवन कारावास

शिवपुरी ब्यूरो। विशेष पॉक्सो अदालत ने एक मासूम दिव्यांग बच्ची से दुष्कर्म के मामले में सख्त फैसला सुनाते हुए आरोपी को उम्रकैद की सजा सुनाई है। छह वर्षीय बच्ची के साथ फरवरी 2024 में थाना बैराड़ क्षेत्र के एक गांव में यह घिनौना अपराध हुआ था। कोर्ट ने आरोपी पर जुर्माना भी लगाया है। इस घटना ने पूरे इलाके को झकझोर दिया था। पीड़िता बोलने और चलने-फिरने में असमर्थ थी। घटना के दिन उसके परिजन खेत पर काम कर रहे थे, जबकि वह पास की टपरिया में अकेली थी। इसी दौरान गांव के ही आरोपी राजू ने उसे हवस का शिकार बनाया। शाम को जब परिजन लौटे, तो आरोपी टपरिया से बाहर निकलता हुआ मिला। बच्ची की हालत देखकर परिजन सन्न रह गए, वह बेहोश थी और खून से लथपथ थी। परिजनों ने तुरंत थाना बैराड़ में मामला दर्ज कराया। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया और जांच के बाद कोर्ट में चालान पेश किया। विशेष न्यायाधीश ने सभी साक्ष्यों, मेडिकल रिपोर्ट और गवाहों के बयानों के आधार पर आरोपी को दोषी माना। कोर्ट ने भारतीय दंड संहिता की धारा 376, 376(क), 354(सी) और पॉक्सो एक्ट की धाराओं 5(एम)(के)/6 एवं 11/12 के तहत आजीवन कारावास और आर्थिक दंड की सजा सुनाई। इस मामले में विशेष लोक अभियोजक प्रीति संत की प्रभावी पैरवी से आरोपी को दोषी करार दिया गया।

दिनारा पुलिस ने देशी कट्टे के साथ एक आरोपी को किया गिरफ्तार

शिवपुरी ब्यूरो। दिनारा थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर चंदावरा रोड से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से एक 315 बोर का देशी कट्टा, एक जिंदा राउण्ड जब्त किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट का मामला दर्ज कर लिया है। दिनारा थाना प्रभारी अमित चतुर्वेदी के अनुसार 29 अप्रैल को मुखबिर की सूचना पर सिद्धन के पास चंदावरा रोड दिनारा से आरोपी दिलीप पुत्र शंकर प्रजापति उम्र 29 साल निवासी चंदावरा रोड थाना दिनारा को गिरफ्तार किया है उसके कब्जे से एक 315 बोर का देशी कट्टा मय एक जिंदा राउण्ड को जप्त किया है। पुलिस ने आरोपी के विरूद्ध थाना अपराध क्रमांक 112/2025 धारा 25/27 आर्म्स एक्ट का पंजीबद्ध किया है। उक्त कार्रवाई में दिनारा थाना प्रभारी उनि अमित चतुर्वेदी, सउनि सोबरन सिंह सिसौदिया मय फोर्स, प्रआर सेवाराम पाण्डे, आर आशीष शर्मा, अरविंद मांझी, सैनिक विशाल शर्मा की सहानीय भूमिका रही।

देहात पुलिस ने 24 घंटे के भीतर ही किया अंधेकत्ल का पर्दाफाश, अवैध संबंधों के चलते दोस्तों ने चाकू से हत्या कर शव को जलाया था

मुंहबोली बहन से अवैध संबंध पर हुई हत्या, पुलिस को गुमराह करने खुद ही पहुंचे थाने

शिवपुरी ब्यूरो। देहात थाना पुलिस ने 24 घंटे के भीतर ही अंधेकत्ल का पर्दाफाश किया है। खुलासे में सामने आया कि बहन से अवैध संबंधों की रंजिश में दो दोस्तों ने मिलकर अपने ही अपने दोस्त की चाकुओं से हत्या कर दी थी। वारदात को अंजाम देने से पहले उन्होंने दोस्त को बियर भी पिलाई। उसके बाद मार डाला। शव को पहचान से बाहर करने के लिए पेट्रोल डालकर जलाने का प्रयास भी किया गया। दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस को 28 की रात में अज्ञात शव मिलने पर जांच की गई थी। एसपी अमन सिंह राठौर ने बताया कि 28 अप्रैल की शाम देहात थाना प्रभारी रत्नेश यादव को सूचना मिली कि ग्राम सुजवाया के पास कोटा-झांसी हाईवे किनारे पुलिया के पास एक अधजली लाश पड़ी है। शव इस तरह जलाया गया था कि उसकी पहचान मुश्किल हो गई थी। लेकिन जांच में मृतक की पहचान राहुल पुत्र मोतीलाल चौधरी उम्र 25 वर्ष के रूप में हुई तथा वह मकान निर्माण का कारीगर था। उसकी दोस्ती रविंद्र उर्फ बिट्टू परिहार और योगेन्द्र उर्फ छोटू जोशी से थी। राहुल के पड़ोस में रहने वाली एक महिला से उसके अवैध संबंध थे। वहीं, रविंद्र परिहार उस महिला को अपनी मुंहबोली बहन मानता था। परिहार के परिवार ने महिला की शादी में भी आर्थिक सहायता की थी। राहुल की नजदीकियों से महिला के घर में विवाद बढने लगे थे। बिट्टू परिहार ने कई बार राहुल को समझाया कि वह उसकी बहन से दूरी बना ले, लेकिन राहुल नहीं माना। बहन का घर उजड़ता देख बिट्टू ने अपने दोस्त छोटू जोशी के साथ मिलकर राहुल को मारने की साजिश रच डाली। जांच के दौरान पता चला कि राहुल चौधरी 27 अप्रैल की शाम 5-30 बजे आखिरी बार बिट्टू और छोटू के साथ देखा गया था। पुलिस ने दोनों को हिरासत में लिया और पूछताछ की। इसके बाद रविंद्र उर्फ बिट्टू परिहार ने हत्या करना कबूल कर लिया। उक्त कार्रवाई में देहात थाना प्रभारी निरी. रत्नेश सिंह, उनि जेबी सिंह वैश, उनि प्रियंका शुक्ला, उनि धर्मेन्द्र जाट (प्रभारी सायबर सेल एवं उनकी टीम) सउनि विनोद सिंह गुर्जर, प्रआर दीपचंद्र, विनय कुमार सिंह, गवत प्रसाद, देवेन्द्र सेन, सुनील भार्गव, मोहन सिंह चौहान, सुरेन्द्र दुबे, राजेन्द्र शर्मा, आर. बदन सिंह, दिनेश सिंह, सचेन्द्र शर्मा, शकील खान, पुष्पेन्द्र रावत, राघवेन्द्र रावत, मिथुन कुशवाह, ऋषभ करारे, रणवीर शर्मा, मनोज गौड, नारायण शर्मा, राघवेन्द्र, म.आर. गायत्री मुदगल, शिल्पी गुप्ता की मुख्य भूमिका रही है।

आरोपियों ने शराब पिलाकर की हत्या, फिर शव जलाया

बिट्टू ने बताया कि हत्या की रात दोनों राहुल को पार्टी के बहाने शहर में घुमाते रहे। फिर सतनवाड़ा स्थित पावर हाउस के मैदान में ले जाकर चार बीयर की कैन पिलाई। नशे में धुत होने पर उस पर चाकुओं से हमला किया और पत्थर से सिर कुचल कर मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद शव को कार में डालकर सुजवाया गांव के पास सुनसान इलाके में ले जाकर पेट्रोल डालकर जला दिया। वारदात को अंजाम देने के बाद दोनों आरोपी शादी समारोह में पहुंचे और खुद की मौजूदगी दर्ज कर पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की। पुलिस ने दोनों की निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल कार, चाकू, मोबाइल के टुकड़े, जले कपड़ों की राख सहित अन्य सबूत बरामद कर लिए हैं।

आदिवासी परिवारों से लूटपाट एवं छेड़छाड़ का मुख्य आरोपी जमोनिया के जंगल से गिरफ्तार, हथियार एवं सामान बरामद

शिवपुरी ब्यूरो। बैराड़ थाना क्षेत्र के बन्हैरा गांव में 13 अप्रैल को आदिवासी परिवारों से हुई लूटपाट और छेड़छाड़ के मामले में पुलिस ने अब तक 4 बदमाशों को पकड़ा है। वहीं बुधवार को पुलिस ने मुख्य आरोपी मुलायम उर्फ सड्डे यादव को जमोनिया के जंगल से गिरफ्तार किया। एसपी अमन सिंह राठौर ने मामले की गंभीरता को देखते हुए पांच अज्ञात आरोपियों पर 10-10 हजार रुपए का इनाम घोषित किया था। जनकारी के अनुसार बैराड़ थाना क्षेत्र में 13 अप्रैल को नीचा बन्हैरा गांव निवासी दौलतराम आदिवासी ने थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। इसके बाद पुलिस ने कई थानों की संयुक्त टीम बनाई। 28 अप्रैल को मुखबिर की सूचना पर टीम ने जमोनिया जंगल से आरोपी को पकड़ा। पूछताछ में उसने बन्हैरा खुर्द की घटना के अलावा पोहरी के परीच्छा अहीर में की गई लूट को भी कबूला। आरोपी से एक देसी कट्टा और जिंदा कारतूस बरामद हुआ है। इसके अलावा चांदी जैसी धातु के दो पायजेब, दो पौचे, एक करधौनी और एक चेन भी मिली है। आरोपी को पुलिस रिमांड पर लिया गया है। उसे 1 मई 2025 को फिर कोर्ट में पेश किया जाएगा। वारदात में शामिल पांच बदमाशों में से अब तक चार पकड़े जा चुके हैं। आरोपी का साथी महेंद्र यादव अभी फरार है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। उक्त कार्यवाही में एसडीओपी पोहरी सुजीत सिह भदौरिया, निरीक्षक शिव सिह यादव थाना प्रभारी बैराड उनि धर्मन्द्र शिवहरे उनि सीमा धाकड, सउनि हरिओम पाण्डेय, दशरथ सिह प्रआर जगेश सिकरवार, सुरेन्द्र भगत, शिरोमणि सिह, आर. राजकुमार माहौर, अवधेश शर्मा, अरूण जादौन, रामअवतार रावत, दुर्गाविजय रावत, संगम उपाध्याय, शोभाराम मीणा, मनीष परिहार की व थाना कोतवाली से प्र.आर. अवतार परिहार, गजेन्द्र परिहार, आर. भोला राजावत एवं थाना फिजीकल से आर. विजय रावत एवं एसडीओपी कार्यालय शिवपुरी स्टाफ प्र.आर. शीतलाल मिश्रा, प्र.आर. छविराम मिश्रा, प्र. आर. सुरेन्द्र पारासर प्र.आर. शेलेन्द्र शर्मा आर. पदम की सराहनीय भूमिका रही।

घर में लगी आग, ढाई लाख रुपए एवं जेवर जले, टेंट हाउस का 10 लाख का सामान स्वाहा

शिवपुरी ब्यूरो। कोलारस कस्बे में मंगलवार-बुधवार की दरमियानी दो जगहों पर आग लग गई। पहली घटना कोलारस की नई सब्जी मंडी के पास स्थित प्रताप कुशवाह पिता अमर सिंह कुशवाह के मकान में हुई, जहां अज्ञात कारणों से अचानक आग भड़क उठी। आग इतनी भीषण थी कि मकान के एक कमरे में रखी ढाई लाख रुपए नगद, कपड़े, अनाज, जेवरात, सभी जरूरी दस्तावेज और मकान का एक हिस्सा जलकर पूरी तरह खाक हो गया। गनीमत रही कि जिस कमरे में आग लगी, वहीं एक एलपीजी सिलेंडर भी रखा था जो झुलस गया, लेकिन उसमें विस्फोट नहीं हुआ। अगर सिलेंडर में आग पकड़ लेती तो हादसा और भी भयानक हो सकता था। इस आगजनी में पीड़ित को करीब 6 लाख रुपए का नुकसान हुआ है। घटना की जानकारी मिलने पर कोलारस तहसीलदार, राजस्व विभाग एवं पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। वहीं दूसरी घटना मोहरा रोड स्थित वैष्णवी टेंट हाउस में घटी, जहां मंगलवार रात करीब 3 बजे आग भड़क उठी। टेंट हाउस संचालक पंचू कुशवाहा घटना के समय दुकान की छत पर सो रहे थे। जब अचानक छत गर्म होने लगी तो उन्हें नीचे आग लगने का आभास हुआ। नीचे उतरकर देखा तो दुकान धूं-धूं कर जल रही थी। आग पर काबू पाने से पहले ही टेंट और डेकोरेशन का सारा सामान, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और दुकान में रखे करीब 2 लाख रुपए नकद जलकर खाक हो चुके थे। इस आगजनी में संचालक को 10 से 12 लाख रुपए का आर्थिक नुकसान हुआ है। पुलिस फिलहाल आग लगने के सही कारणों की जांच कर रही है। प्रशासन ने दोनों ही पीड़ितों को हर संभव मदद का भरोसा दिया है।

सूचना पर सिल्लारपुर गांव में पहुंची टीम, समझाया तो परिजनों ने बाल विवाह रोका

शिवपुरी ब्यूरो। करैरा तहसील के सिल्लारपुर गांव में 16 वर्षीय बालिका के बाल विवाह की सूचना मिलने पर महिला बाल विकास के परियोजना अधिकारी रविरमन पाराशर, पर्यवेक्षक गीता जाटव, थाना करैरा से सब इंस्पेक्टर अंजली सिंह, प्रआ राघवेंद्र सिंह चौहान, काजल शर्मा एवं नरेंद्र राजपूत मौके पर पहुंचे। स्थानीय आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अकालवती जाटव उपस्थिति रहीं। बालिका के आयु प्रमाण पत्रों को देखने के बाद जब यह स्पष्ट हुआ कि बालिका की आयु 18 वर्ष से कम है, तब परिजनों को बाल विवाह के दुष्परिणाम और बाल विवाह निषेध कानून के प्रावधानों की जानकारी दी गई। काफी समझाने के बाद परिजनों ने बालिका की उम्र पूरी होने के बाद ही विवाह करने का लिखित आस्वासन दिया है। मौके पर पंचनामा भी बनाया गया। परियोजना अधिकारी रविरमन पाराशर ने बताया कि 18 वर्ष से पहले लड़की का तथा 21 वर्ष की आयु से पहले लड़के का विवाह बाल विवाह की श्रेणी में आता है। बाल विवाह में वर बधू के परिजनों के अलावा उसमे सहयोग करने वाले, सेवा प्रदाता, उसमें शामिल होने वाले लोगों को भी दोषी माना गया है। जिसके लिये कानून में 2 साल की सजा तथा एक लाख रुपये जुर्माने का प्रावधान किया गया है। उन्होंने आमजन से अपील की यदि आपको किसी बाल विवाह की जानकारी हो तो उसकी सूचना चाइल्ड लाइन नंबर 1098, महिला हेल्पलाइन नंबर 181 या कंट्रोल रूम नंबर 07492356963 पर सूचना देकर बच्चों के विकास में सहभागी बन सकते है।

एनीमिया मुक्त भारत अभियान के तहत ब्लॉक करैरा में अंतर्विभागीय बैठक हुई आयोजित

शिवपुरी ब्यूरो। ब्लॉक करेरा में एनीमिया मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत अंतर्विभागीय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता एस.डी.एम. करेरा द्वारा की गई तथा जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ अलका त्रिपाठी भी उपस्थिति रही।

इस बैठक में स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, आदिम जाति कल्याण विभाग सहित विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बैठक का उद्देश्य एनीमिया की रोकथाम एवं इसके उन्मूलन के लिए विभिन्न विभागों के समन्वित प्रयासों को सशक्त बनाना रहा। विद्यालयों में आयरन और फोलिक एसिड टैबलेट का नियमित वितरण। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी पात्र बच्चों को समय पर टैबलेट्स और सिरप की नियमित खुराक मिलें। ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान बच्चे के अभिभावकों को प्रत्येक मंगलवार को नीली गुलाबी उम्र अनुसार खाने की समझाइश दी जाए। किशोरियों और बच्चों की स्वास्थ्य जांच और स्क्रीनिंग नियमित स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से एनीमिया की पहचान और उपचार की व्यवस्था की जाएगी। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सक्रिय भूमिका पर चर्चा हुई। जनजागरूकता बढ़ाने और पोषण संबंधी जानकारी देने में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अहम भूमिका निभाएँगी तथा 6 माह से 5 वर्ष के बच्चों के माता पिता को व्हीएचएनडी के दौरान आयरन सिरप की उपयोगिता को बढ़ावा देने के लिए सत्र आयोजित किए जाए।

जन-जागरूकता अभियान समुदाय स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँगे, जिसमें महिलाओं और किशोरियों को सही पोषण की जानकारी दी जाएगी। सम्भागीय समन्वयक ऋषिकांत पांडेय ने बताया कि आई एफ ए सामग्री और मेडिकल सपोर्ट की सभी स्वास्थ्य केंद्रों, स्कूल तथा आंगनवाड़ी केंद्रों पर आवश्यक दवाओं और परीक्षण साधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। सेक्टर स्तर पर बैठके करके जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय स्थापित करके अभियान का क्रियान्वयन करे।एस.डी.एम. अजय शर्मा ने सभी विभागों को अभियान को सफल बनाने के लिए समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए। इस दौरान बीएमओ डॉ रोहित भदकारिया, बीसीएम अवधेश गौरैया, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, बीआरसी तथा सीडीपीओ, डब्लू एच ओ प्रतिनिधि सहित विभाग के अन्य अधिकारियों की उपस्थिति रही।

बदरवास पुलिस ने बाइक से सब्जी बेचने वाले शराब तस्कर को किया गिरफ्तार, 400 क्वार्टर शराब सहि बाइक जब्त

शिवपुरी ब्यूरो। बदरवास थाना पुलिस ने मुखबि की सूचना पर गांव-गांव बाइक से सब्जी बेचने वाले शराब तस्कर को गिरफ्तार किया है। टीआई विकास यादव के अनुसार मंगलवार शाम को मुखबिर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति छोटी घुरवार की ओर से बाइक पर सब्जी की झोलियों में शराब छिपाकर ला रहा है। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी को पकड़ लिया। पकड़े गए आरोपी की पहचान हरवीर मोंगिया के रूप में हुई है। वो अशोकनगर जिले के रौंसर जागीर का रहने वाला है। पुलिस ने उसकी तलाशी ली तो प्लास्टिक की झोलियों से 200 क्वार्टर देसी प्लेन और 200 क्वार्टर देशी मसाला शराब बरामद हुई। कुल 72 लीटर शराब की कीमत लगभग 44 हजार रुपए है। पुलिस ने आरोपी की 40 हजार रुपए कीमत की बाइक भी जब्त कर ली है। आरोपी के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

सीएमएचओ ने किया चिकित्सा संस्थानों का किया निरीक्षण, लू ताप घात से बचाव की व्यवस्थाओं का लिया जायजा

निजी अस्पतालों पर भी की छापामार कार्यवाही

धौलपुर ब्यूरो। भीषण गर्मी के दौर में आमजन को लू तापघात से बचाव हेतु चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग गंभीर है। आमजन को लू तापघात से बचाव के लिए जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी के निर्देशानुसार एडवाइजरी जारी की जा रही है। साथ ही चिकित्सा संस्थानों पर भी उपचार हेतु माकूल व्यवस्था की गई है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धर्मसिंह मीणा ने बुधवार को इस संबंध में जिले के विभिन्न चिकित्सा संस्थानों का औचक निरीक्षण कर चिकित्सा संस्थानों पर लू ताप घात से बचाव की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। सीएमएचओ डॉ. मीणा ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कंचनपुर, सैंपऊ, बसई नवाब, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खानपुर का निरीक्षण किया। इस दौरान सभी चिकित्सा संस्थानों पर हीटवेव एवं मौसमी बीमारियों से बचाव एवं उपचार की व्यवस्थाओ की समीक्षा की गई।तथा आई एच आई पी पोर्टल पर नियमित रिपोर्टिंग करने हेतु निर्देशित किया। अस्पतालों में कूलर, पंखे, एसी, पीने का पानी, वाटर कूलर आदि क्रियाशील मिले। चिकित्सा संस्थानों पर सभी व्यवस्थाए माकूल पाई गई। सीएचसी सैंपऊ पर सफाई व्यवस्था ठीक नहीं पाई गई इसके लिए चिकित्सा अधिकारी प्रभारी को दिशा निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान सीएमएचओ डॉ.मीणा द्वारा इस दौरान झोलाछाप चिकित्सकों एवं अंकुश लगाने के हेतु छापामार कार्रवाई की गई। साथ ही निजी नर्सिंग होम के भी निरीक्षण किए गए। इस दौरान उन्होंने रहना वाली क्लीनिक एवं होम केयर मरैना, प्रकाश हॉस्पिटल राजाखेड़ा, सुप्रिया नर्सिंग होम राजाखेड़ा, चौहान क्लिनिक कंचनपुर तथा गोपाल प्रसाद माहौर, चाँदसी क्लीनिक बसई नवाब का निरीक्षण किया अनियमितता पाए जाने पर सभी को नोटिस जारी कर तीन दिवस में क्लीनिक संचालन एवं योग्यता संबंधी प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि तीन दिवस में जवाब संतोषप्रद न मिलने पर कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जावेगी। निरीक्षण के दौरान एपिडेमोलॉजिस्ट अखिलेश गर्ग सहित अन्य साथ रहे।

नीट परीक्षा 2025 के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त

धौलपुर ब्यूरो। महानिदेशक राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी एनटीए द्वारा नीट परीक्षा 2025 का आयोजन 4 मई को जिला मुख्यालय में निर्धारित 7 परीक्षा केन्द्रों पर किया जाएगा। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी ने बताया कि परीक्षा के निष्पक्ष, निर्विघ्न व सफल संचालन, मॉनीटरिंग एवं राष्ट्रीय एजेंसी एनटीए द्वारा जारी दिशा निर्देशानुसार समस्त आवश्यक व्यवस्थाऐं सुनिश्चित करने के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए है। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन का नोडल अधिकारी स्वयं जिला कलक्टर एवं पुलिस प्रशासन का नोडल अधिकारी जिला पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा को नियुक्त किया गया है।

उत्तर मध्य रेलवे

पत्र सं.: मथुरा/क.वि./प्रेस विज्ञप्ति **दिनांक:** 25.04.2025

गैर हाजिरी सूचना

श्री अमित चंदेल पुत्र स्व. श्री रामप्रसाद चंदेल स्थायी निवासी स्थान- मकान न. 2113, बहादुरपुरा, निकट डेम्पियर रोड, मथुरा (उ.प्र.) पिन- 281001, जो कि विद्युत टीआरडी विभाग में सहायक (टीआरडी) के पद पर विद्युत टीआरडी डिपो, रामगढ़ में सहायक मंडल इंजी/टीआरडी/मथुरा के अधीन कार्यरत है। **श्री अमित चंदेल** पुत्र स्व. श्री रामप्रसाद चंदेल **दिनांक 26.08.2023** से निरंतर रेलवे ड्यूटी से बिना किसी सूचना के अनाधिकृत रूप से अनुपस्थिति चल रहे है। कर्मचारी के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही लम्बित है। इस सम्बन्ध में अपना पक्ष रखने के लिए **श्री अमित चंदेल** पुत्र स्व. श्री रामप्रसाद चंदेल इस सूचना की प्रकाशन की तिथि से **15 दिन** के अन्दर अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में, उपस्थित हो अन्यथा एक पक्षीय निर्णय लिया जायेगा।

अनुशासनात्मक अधिकारी
सहायक मण्डल विद्युत इंजीनियर/टीआरडी
मथुरा

731/25(A)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

राजकीय सम्मान के साथ आज होगा शहीद गौरव सिंह सेंगर का अंतिम संस्कार

जगह-जगह दी जाएगी अंतिम यात्रा को विदाई

शिवपुरी ब्यूरो। आईटीबीपी में सेवारत शहीद गौरव सिंह सेंगर पुत्र हरिश्चंद्र सिंह सेंगर की अंतिम यात्रा गुरुवार को प्रात- 7 बजे राजकीय सम्मान के साथ उनके निज निवास माधव विहार, वीरेंद्र रघुवंशी कोठी के पास से मुक्तिधाम के लिये प्रस्थान करेगी। वे वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश में तैनात थे व सेवा के दौरान वीरगति को प्राप्त हो गये थे। कल गुरुवार 1 मई को सुबह 7 बजे, राजकीय सम्मान के साथ उनकी अंतिम यात्रा पारिवारिक निवास माधव विहार कॉलोनी, वीरेंद्र रघुवंशी की कोठी के पास से पोहरी चौराहा, अग्रसेन चोक, कोर्ट रोड, माधव चोक चौराहा, गुरुद्वारा, झांसी तिराहा होते हुये मुक्तिधाम प्रस्थान करेगी। शहीद गौरव सिंह सेंगर का अंतिम संस्कार शासकीय सम्मान (गार्ड ऑफ ऑनर) के साथ किया जाएगा। 37 वर्षीय शहीद गौरव सिंह सेंगर की अंतिम यात्रा को जन प्रतिनिधियों, प्रशाशनिक अधिकारियों, शहर के तमाम समाजसेवी संगठनों, जन सामान्य द्वारा जगह जगह श्रद्धांजलि दी जाएगी।

दलितो पर हो रहे अन्याय, अत्याचार को लेकर बसपा की विशाल रैली कल, राज्यसभा सांसद गौतम करेगें नेतृत्व

मुरैना,कांस। जिले भर में दलितो पर हो रहे अन्याय, अत्याचार,जघन्य घटनाओं एवं केन्द्र व प्रदेश में काविज भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियो के खिलाफ बहुजन समाज पार्टी कल 2 मई को सुबह 11 बजे विशाल रैली निकालकर महामहिम राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौपेगी, रैली का नेतृत्व पार्टी के राज्यसभा सांसद रामजी गौतम करेगें। उक्त आशय की जानकारी बहुजन समाज पार्टी के लोकसभा प्रत्यासी रमेश चन्द्र गर्ग, प्रदेश अध्यक्ष इन्जी. रमाकांत पिप्पल,जिलाध्यक्ष इन्जी. दीपेन्द्र बौद्ध, सुमावली बसपा प्रत्यासी रहे कुलदीप सिकरवार ने सयुक्त प्रेस वार्ता जारी कर दी। प्रेस को सम्बोधित करते हुए श्री रमेशचन्द गर्ग ने कहा कि कुछ समय से जिले भर में आए दिन गोली चलना, गंभीर घटनाओ का होना आम बात हो गई है, जिससे जिले का आम नागरिक अपने आपको असुरक्षित महसूस कर रहा है, शहर में अमन शांति एवं आपराधिक घटनाओ पर अंकुश लगे इसके लिए पार्टी 2 मई को सुबह 11 बजे विशाल रैली निकाल कर महामहिम के नाम ज्ञापन सौपेगी, इस विशाल रैली का नेतृत्व पार्टी के राज्यसभा सांसद रामजी गौतम करेगें। सुमावली विधानसभा से बसपा प्रत्यासी रहे कुलदीप सिकरवार ने कहा कि बसपा हर वर्ग की आवाज उठाती आई और उठाती रहेगी, इस समय प्रशासन गहरी नींद में सो रहा है, जिसके कारण जिले में अपराधो का ग्राफ बढ रहा है। पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए बसपा के प्रदेश अध्यक्ष इन्जी. रमाकांत पिप्पल ने कहा कि भाजपा के शासनकाल में देश-प्रदेश में अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगो पर अन्याय, अत्याचार बढे है, इस मामले में प्रदेश पहले नम्बर है। उन्होने कहा कि मुरैना जिले में दलित समाज के लोगों की मृत्यु होने पर उसे शमशान में जलने नही देते ऐसी ही घटना अभी हाल में घटित हुई है। जहॉ रावत समाज के लोगो ने दलित की अर्थी को जलने नही दिया। शादियो में दूल्हे को घोडी पर बैठकर नही निकलने देना तथा डीजे बजाने पर एक युवक की निर्मम हत्या करना सामंतवादी सोच को प्रदर्शित करता है। जबकि देश को आजाद हुई कई वर्ष हो गए इस आजाद देश में प्रत्येक नागरिक को स्वतंत्र जीने व अपनी बात को रखने का हक अधिकार संविधान ने दिया है। लेकिन सामंतवादी लोग दलितो से लोग घृणा करते है और जब वारी वोट की आती है तो भाई चारा बना लेते है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि संविधान आरक्षण के तहत पूरे देश सें 131 सांसद चुनकर संसद में जाते है। लेकिन वो भी अपने समाज, अपनी बहन-बेटियो की आवाज सदन में दबाव के कारण नही उठा पाते है।

बसपा के एक मात्र राज्यसभा में रामजी गौतम जी सांसद है जो हर समय दलित, पिछडो की आवाज उठा कर उनके हक अधिकार की लडाई लडते है। पत्रकार वार्ता के दौरान बसपा के गंभीर सिंह नरवरिया, डॉ. विद्याराम कौशल, एड. भीमसेन पहाडिया, इन्जी. अमृतलाल टैंगोर, सुरेन्द्र शाक्य, विजय सोलंकी सहित अनेक पार्टी पदाधिकारी मौजूद थे।

बाल विवाह रोकने गई टीम को घर में ताला लगा मिला

(चम्बलसुर्खी संवाददाता)

सबलगढ़। ग्राम मार का पुरा में कुमारी कल्लो रावत,रजनी रावत पुत्री अशोक रावत,मीनेश पुत्री बंटी रावत का बाल विवाह रुकवाने हेतु महिला बाल विकास परियोजना अधिकारी के एस बघेल,पर्यवेक्षक भगवती शर्मा,बबीता गोयल,पटवारी अखिलेश जाटव,प्रधान आरक्षक सुग्रीव रावत,आरक्षक राहुल सिंह वअम्रता सिंह की संयुक्त टीम द्वारा मोके पर उपस्थित होकर जांच की गई।जांच में बंटी रावत एवम अशोक रावत के घर पर ताला लगा पाया गया।ग्रामवासियों द्वारा पंचनामा देकर बताया गया कि ग्राम में कोई भी बाल विवाह नही हुआ है अशोक एवम बंटी रावत सपरिवार अपनी रिश्तेदारी में गए हुए हैं।

मुख्यमंत्री कन्यादान योजना में 42 जोड़ों के विवाह हुए

(चम्बलसुर्खी संवाददाता)

बीरपुर। बीरपुर में बुधवार को अक्षयतृतीया के अवसर पर अनाज मंडी परिसर में मुख्यमंत्री कन्यादानयोजना के तहत सामुहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन ग्राम पंचायत द्वारा किया गया।यह आयोजन जनपद सीईओ व जनपदअध्यक्ष की देखरेख में सम्पन्न हुआ।इस विवाह सम्मेलन में 42 जोड़ों का विवाह सम्पन्न हुआ।मुख्यअतिथि दर्जाप्राप्त मंत्री तुरसनपॉल बरैया व पूर्व विधायक बाबूलाल मेवरा ने नवदम्पतियों को शुभकामनाएं दी व शासन द्वारा निर्धारित उपहार भेंट किये।विवाह सम्मेलन में अनेक गणमान्यनागरिक, राजनेता, समाजसेवी व पत्रकार मौजूद रहे।टीआई श्री राजनसिंह गुर्जर के नेतृत्व में सुरक्षाव्यवस्था के उचित प्रबंध किए गए।

जिले भर में श्रद्धाभाव से मनाया भगवान परशुराम का प्रकटोत्सव

मुरैना। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर भगवान परशुराम जी का प्रकटेत्सव जिले भर में पूर्ण धार्मिक श्रद्धाभाव के साथ मनाया जा रहा है। क्षेत्र के सभी मंदिरों पर सुबह से ही श्रद्धालुओं ने पहुंचकर भगवान परशुराम जी का गंगाजल से स्नान कराकर पंचामृत से अभिषेक कराया। अनेक स्थानों पर सुन्दरकाण्ड का पाठ किया गया। वहीं हवन व कन्याभोज आयोजित किये गये। इस अवसर पर वरिष्ठ विप्रजनों द्वारा जनहित में कार्य करने के लिये उपस्थित श्रद्धालुओं से अपील की। जिले के बड़ोखर स्थित मुख्य मंदिर पर सुबह से ही श्रद्धालुओं ने भगवान परशुराम जी की प्रतिमा को गंगाजल से स्नान कराया, वहीं विप्रजन द्वारा भगवान के प्रकटेत्सव पर पूर्ण मंत्रोच्चार के साथ पंचामृत से अभिषेक कराया। भगवान की आरती के पश्चात मंदिर में आने वाले सभी श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरण की गई। यहां सुबह से ही भगवान परशुराम जी के दर्शन कर श्रद्धालुओं ने आशीर्वाद लेकर सभी को शुभकामनाएं दीं। सम्पूर्ण मंदिर परिसर की आकर्षक साज-सज्जा की गई।

भगवान परशुराम जी की पूजा कर हवन व कन्याभोज कराया

जिले के एमएस रोड़ स्थित बागचीनी चौराहे पर निर्मित भगवान परशुराम जी मंदिर पर आज सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। मोंदर के पुजारीगण द्वारा श्रद्धालुओं के सहयोग से भगवान परशुराम जी की प्रतिमा का गंगाजल से स्नान कराकर मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक किया गया। भगवान के प्रकटेत्सव पर सुन्दरकाण्ड का संगीतमय पाठ करने के बाद हवन में शांती समृद्धि के लिये आहुतियां दी गई। पूर्ण धार्मिक आस्था के साथ पूजा कर कन्याओं को भोजन कराया गया। वहीं श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरण की गई। बागचीनी क्षेत्रान्तर्गत अनेक गांव से श्रद्धालु भगवान की पूजा अर्चना के लिये मंदिर पर पहुंचे। सैकड़ों विप्रजन शामिल हुये। पूजा व अभिषेक के पश्चात श्रद्धालुओं द्वारा भगवान के चरणों में पुष्प अर्पित व माल्यार्पण कर आशीर्वाद लिया। इसी तरह मुरैना शहर के किनारे पर बसे गांव सुन्दरपुर में भी भगवान परशुराम जी की विधिवत पूजा अर्चना की गई। श्रद्धालुओं द्वारा भगवान परशुराम जी का पूर्ण अभिषेक कर प्रसादी वितरण की गई।

भगवान परशुराम के वंशज स्वभाव से अन्याय के विरोधी : पंकज उपाध्याय

जौरा। सनाढ्य धर्मशाला स्थित भगवान परशुराम का मंदिर आज प्रात काल से ही श्रद्धालुओं की चहल-पहल का केंद्र रहा। ब्राह्मण समाज एवं अन्य समाज के श्रद्धालुओं ने भगवान परशुराम की विधि विधान से पूजा अर्चना कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। मंदिर परिसर भगवान परशुराम के जयकारों से गूंजता रहा। भगवान परशुराम की प्रकटोत्सब के अवसर पर मंदिर को भव्य एवं आकर्षक रूप से सजाया गया था। नवनिर्वाचित अध्यक्ष कमलेश दुबे ने कहा कि भगवान परशुराम अन्याय के प्रतिकार करने वालों का प्रतीक है। भगवान परशुराम जी ने अपने शस्त्र एवं शास्त्र के बल पर धरती को कई बार अन्यायियों से मुक्त कराने का काम किया। जौरा विधायक पंकज उपाध्याय ने पूजा अर्चना के बाद श्रद्धालुओं से चर्चा करते हुए कहा कि भगवान परशुराम हमारे कुल प्रवर्तक एवं आराध्य हैं। इसलिए सर्व समाज में होने वाले अन्याय का पूरी क्षमता से विरोध करना ब्राह्मण समाज का दायित्व है। तभी हम सच्चे ब्राह्मण कहलाने के अधिकारी हैं।

ई-रिक्सा पलटने से एक की मौत

मुरैना,कांस। जिले की निरार थाना क्षेत्र में सवारिया भर कर जा रहे ई रिक्सा थाना क्षेत्र के चांचुल घाटी पर पलटने से उसमें सवार होकर जा रही कीरती पुत्री देवेन्द्र शर्मा निवासी विजली घर के सामने जौरा की मौत हो गई। थाना पुलिस ने फरियादी राकेश पुत्र दामोदर शर्मा निवासी विलगॉव जौरा की रिपोर्ट पर से मर्ग कायम कर जांच में लिया गया है।

वीरपुर में लगा एक किलोमीटर लम्बा जाम,वाहन चालक परेशान

(चम्बलसुर्खी संवाददाता)

वीरपुर। बीरपुर में अक्षयतृतीया के सहालग के चलते मुख्य सड़क पर बुधवार को एक किलोमीटर लम्बा जाम लग गया।इस जाम में फंसने के कारण वाहन चालकों,आम जनता व बरात की बसों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।बताया गया है कि ग्राम पंचायत बीरपुर द्वारा करीब एक दशक पहले बीरपुर थाने के सामने बस स्टैंड बनाया गया था।जिसमें लाखो रुपये खर्च कर सीमेंट कॉन्क्रीट से पक्का कराया गया,किन्तु इस बस स्टैंड में बस वाले अपनी बसें खड़ी नहीं करते हुए सड़क किनारे खड़ी करते है जिससे यातायात बाधित होता है।साथ ही टू व्हीलर फोर व्हीलर व ईरिक्शा भी सड़क पर ही खड़े रहते है। ग्राम पंचायत में जाम को देखते हुए बाजार में दोनों साइड लोहे के मोटे पाइप लगवा दी है लेकिन उनके बावजूद भी ट्रैफिक व्यवस्था पर लगाम नहीं कर पा रहे हैं। स्थिति यह बनती है कि बीरपुर में घंटे तक राहगीर एवं वाहन चालकों को बहुत परेशानी सहन करनी पड़ती है इसी हाईवे पर अधिकारी से लेकर मंत्री तक निकलते हैं लेकिन वीरपुर ग्राम पंचायत पर किसी का ध्यान नहीं है।

इनका कहना है कि-

बसों को बस स्टैंड में खड़ा कराया जाएगा।अतिक्रमण भी हटाया जाएगा जिससे जाम नहीं लगे।व्यापारियों व गणमान्य व्यक्तियों के साथ बैठक कर समस्या का निदान किया जाएगा।

-राजन सिंह गुर्जर, थाना प्रभारी,बीरपुर

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जन अभियान परिषद जौरा ने ग्राम मानपुर पृथ्वी एवं नाहरदौंकी में रैलियों का आयोजन किया

मुरैना,कांस। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जन अभियान परिषद जौरा ने बुधवार को ग्राम मानपुर पृथ्वी एवं नाहरदौंकी में रैलियों का आयोजन किया। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद मुरैना के जिला समन्वयक श्री सतीश तोमर, जौरा ब्लॉक समन्वयक श्री बीडी शर्मा के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में नवांकुर समिति से कैलाश शर्मा, विष्णु सिंह तोमर, अलकेश राठौर, जितेंद्र शर्मा, परीक्षित शर्मा, परामर्शदाता श्री प्रशांत शर्मा, पुष्पा राजपूत, सुघर सिंह राजपूत, दीवान सिंह राठौर, विजेंद्र सिंह राजपूत के सहयोग से रैली पूरे गांव में निकाली गई। ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति मानपुर पृथ्वी के सचिव अलकेश राठौर ने रैली के माध्यम से ग्रामीणों को बताया कि ग्रामीण इलाकों में सूखे की समस्या बढ़ती जा रही है। अगर हम समय पर नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियों को पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ेगा। जल बचाना न केवल हमारी जिम्मेदारी है, बल्कि यह पर्यावरण और जीवन को बचाने का एकमात्र उपाय भी है। हमें छोटे-छोटे कदम जैसे नल बंद रखना, बारिश के पानी को सहेजना और पानी का सही इस्तेमाल करके इसे बचाने की कोशिश करनी चाहिए। याद रखें, पानी बचाना यानी भविष्य बचाना। ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति नाहरदौंकी ने कहा कि जल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम इसे पीने, खाना बनाने, सफाई, खेती और उद्योगों में इस्तेमाल करते हैं। पौधों और जानवरों के जीवन के लिए भी जल बहुत जरूरी है। धरती पर हर जीव का अस्तित्व जल पर निर्भर करता है, जल है तो कल है।

धर्मगुरुओं ने संभाली बाल विवाह की रोकथाम की कमान

(चम्बलसुर्खी संवाददाता)

बीरपुर। बाल अधिकारों की सुरक्षा और बाल विवाह की रोकथाम के लिए कार्यरत संगठन धरती संस?था ने बाल विवाहों की रोकथाम के लिए धर्मगुरुओं ने जागरूकता अभियान चलाया। संगठन के श्री सीताराम शर्मा,श्री अवनीश सिंह एवं धर्मगुरु विनोद कुमार शर्मा, पवनसुत मुदगल द्वारा धरती संस्था कार्यालय पर धर्मगुरुओं की बैठक आयोजित की गई।जिसमें फैसला लिया गया कि पूरे जिले में बालविवाह के विरोध में अभियान चलाएंगे।इसी का परिणाम है कि श्योपुर जिले में एक भी बालविवाह नही हुआ।

युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या की

मुरैना,कांस। दिमनी थाना क्षेत्र के ग्राम ऐसा में निवास करने वाले जितेन्द्र पुत्र पूरन माहौर उम्र 35 साल ने अपने घर के कमरे में फांसी का फन्दा लगाकर झूल गया जिससे उसकी मौत हो गई। थाना पुलिस को जैसे ही इस घटना की जानकारी मिली तो पुलिस ने मौके पर पहुँच कर शव को फन्दे से नीचे उतारकर उसका मौका पंचनामा बनाकर शव का पीएम कराकर उसक उसके परिजनो को सौपकर फरियादी पूरन पुत्र दर्शन माहौर की रिपोर्ट पर से मर्ग कायम कर विवेचना में लिया गया है।

जंबूरी दशहरा मैदान में हुआ सर्व समाज कन्या विवाह सम्मेलन

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने 108 जोड़ों को दिया आशीर्वाद

भोपाल। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने अक्षय तृतीया पर मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना अंतर्गत आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में सहभागिता की और नवविवाहित जोड़ों को प्रेम, समर्पण और एक दूसरे के प्रति स्नेह, विश्वास से भरे जीवन की शुभकामनाएं दीं। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने गोविंदपुरा क्षेत्र के जम्बूरी मैदान में सर्व समाज कन्या विवाह योजना के तहत 108 जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि सौभाग्य व समृद्धि का पावन पर्व अक्षय तृतीया आप सभी के जीवन में उन्नति, संपन्नता और प्रसन्नता लेकर आए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश के गरीब परिवारों एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए हमारी सरकार निरंतर अच्छा करने का प्रयास कर रही है। ऐसे परिवार जो आर्थिक कठिनाई के कारण से बेटे-बेटियों के विवाह संपन्न नहीं कर पा रहे थे, हमारी सरकार ने ऐसे परिवारों का सहारा बनने का संकल्प लिया है। महापौर श्रीमती मालती राय, श्री विनोद कुमार साहू, श्रीमती ममता विश्वकर्मा, श्रीमती छाया ठाकुर, श्रीमती उर्मिला मौर्य, श्री संतोष ग्वाला, श्री शिवलाल मकोरिया, श्री मनोज विश्वकर्मा, श्री संजय शिवनानी सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं नवविवाहित जोड़ों के परिजन इस अवसर पर मौजूद थे।

रक्तदान एक महादान, जो हर व्यक्ति को समय-समय पर करते रहना चाहिये

मुरैना,कांस। रक्तदान जीवन दान है, जो हमारे द्वारा किया गया, रक्तदान कई जिन्दगियों को बचाता है। इस बात का अहसास हमे जब होता है, तब हमारा कोई अपना खून की कमी होने पर जिदंगी और मौत के बीच झूझता है। जिनमें गर्भवती महिलाएं, किशोरी बालक, बालिकाएं, दुर्घटना से ग्रस्त कोई भी हो सकता है। देशभर में रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास किये जा रहें है, परन्तु अब यह प्रयास सार्थक होंगे। सिविल सर्जन डॉ. गजेन्द्र सिंह तोमर ने बताया है कि रक्तदान करने के लिए हम अपने मित्रों, रिश्तेदारों को भी आगे आने के लिए प्रेरित करेंगे। रक्तदान कोई भी स्वस्थ व्यक्ति जिसकी आयु 18 से 60 वर्ष के बीच हो, जिसका वजन 45 किग्रा. से अधिक हो। जिसके रक्त में हिमोग्लोबिन 12.5 प्रतिशत से अधिक हो। रक्तदान करने के लिये जिला चिकित्सालय के नवीन भवन में 3 मंजिल पर ब्लड बैंक में जाकर रक्तदान हेतु आवश्यक सलाह शासकीय समय में ब्लड बैंक प्रभारी डॉ. निखिल जैन के मोबाइल नंबर 7974662672 से सपर्क कर सकते उन्होनें बताया कि 1 रक्त यूनिट से 3 लोगों की जिदंगी बचा सकते है। जिला चिकित्सालय मुरैना में कम्पोनेंट सेपरेशन की भी व्यवस्था है, जिससे जरूरतमंद लोंगों में प्लाजमा, पेक्डसैल एवं डेंगू के मरीजों हेतु प्टललेटस की उपलब्धता जिला चिकित्सलाय में उपलब्ध है। 24 घंटे रक्तदान करने की सुविधा उपलब्ध है। आप बर्थडे एवं शादी की सालगिरह पर रक्तदान कर सकते है। डिप्टी मीडिया ऑफिसर श्रीमती रामलली माहौर ने एएनसी वार्ड में जाकर लोगों को ब्लड देने हेतु जानकारी दी। रक्त देने में 10 से 15 मिनट का समय लगता है। रक्तदान के बाद व्यक्ति प्रतिदिन जो आहार लेता है, उसी से खून की पूर्ति हो जाती है। कार्यक्रम प्रबंधक ने आमजन से अपील की है कि रक्तदान एक महादान है, जो हर व्यक्ति को समय-समय पर करते रहना चाहिए, जिससे किसी भी बीमार व्यक्ति की मदद हो सकें।

2 मई को सभी जिलों में मनेगा लाड़ली लक्ष्मी उत्सव

''एक पेड़ लाड़ली लक्ष्मी के नाम'' अभियान में होगा पौध-रोपण

मुरैना,कांस। मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना अन्तर्गत 2 मई 2025 को प्रदेश में 'लाड़ली लक्ष्मी उत्सव' जिला, नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायत पर उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाएगा। इसमें स्थानीय प्रतिनिधि, लाड़ली बालिकाएं, उनके अभिभावक, लाड़ली क्लब की अध्यक्ष और सदस्य सक्रिय रूप से भाग लेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लाड़ली लक्ष्मी योजना मध्यप्रदेश सरकार की बेटियों के प्रति समर्पित सोच का प्रतीक है। हमारा लक्ष्य है कि हर बेटी को सम्मान, शिक्षा और आत्म-निर्भरता के अवसर प्राप्त हों। लाड़ली लक्ष्मी उत्सव एक नई ऊर्जा और विश्वास का संचार करेगा। उन्होंने प्रत्येक जिला और निकाय स्तर पर कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं, जिससे समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच और सशक्तिकरण का वातावरण तैयार हो। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लाड़ली लक्ष्मी उत्सव केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि बेटियों के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण के प्रति साझा संकल्प है। लाड़ली लक्ष्मी उत्सव का संचालन स्वयं लाड़ली बालिकाओं द्वारा किया जाएगा। इसमें कन्या-पूजन, दीप प्रज्ज्वलन, लाड़ली बालिकाओं के प्रेरक उद्बोधन और 'अपराजिता' कार्यक्रम अन्तर्गत मार्शल आर्ट का प्रदर्शन जैसे विशेष कार्यक्रम शामिल है। इस उत्सव के जरिये जिला, नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायत स्तर पर बेटियों के सम्मान और सशक्तिकरण का संदेश जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। कार्यक्रम में उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाली बालिकाओं तथा लाड़ली लक्ष्मी फ्रेंडली पंचायतों का सम्मान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त ''एक पेड़ लाड़ली लक्ष्मी के नाम'' अभियान में जन-प्रतिनिधियों और बालिकाओं द्वारा पौध-रोपण भी किया जाएगा। साथ ही लाड़ली बालिकाओं को आश्वासन प्रमाण-पत्र वितरित किये जायेंगे। कार्यक्रम में लाड़ली क्लब की सदस्य बालिकाएं अपने अनुभव भी साझा करेंगी।

युवती ने जहर गटका, उपचार के दौरान मौत

मुरैना,कांस। कैलारस थाना क्षेत्र में निवास करने वाली युवती रितु पुत्री मेघ सिह राठौर उम्र 17 साल ने अपने घर पर जहरीला पदार्थ का सेवन कर लिया था जिससे उसकी तवियत खराब होने पर उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया जहॉ उपचार के दौरान युवती की मौत हो गई। थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर विवेचना में लिया गया है।

अवैध हथियारधारी धरे

मुरैना,कांस। जिले की कोतवाली एवं अम्बाह पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर से अलग-अलग दविश देकर अवैध हथियार धारियो को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से अवैध हथियार जप्त किए है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कोतवाली थाना पुलिस को जरिए मुखबिर सूचना मिली कि श्रीराम कॉलौनी के पास कुछ लोग अवैध हथियार लेकर किसी वारदात की नियत से घूम रहे है इस सूचना पर से पुलिस ने दविश देकर आरोपी माखन उर्फदीपू गूर्जर पुत्र स्व. दीवान सिंह गुर्जर निवासी तुस्सीपुरा वृजबढी चित्रौनी एवं हेमसिह गुर्जर को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से एक 315 बोर की अधिया एक कट्टा मय दो जिन्दा राउण्ड के जप्त कर आरोपियो के खिलाफआर्म्स एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया है। इसी प्रकार अम्बाह थाना पुलिस ने माखन वाटिका गार्डन के पास से आरोपी रामनिवास गुर्जर पुत्र जगदीश गूजर निवासी दलजीत का पुरा को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से एक 32 बोर की पिस्टल 6 जिन्दा राउण्ड जप्त कर आरोपी के खिलाफआर्म्स एक्ट के तहत आपराधिक प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है।

भगवान परशुराम की जन्मस्थली जानापाव में बनेगा परशुराम धाम : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भगवान परशुराम जयंती पर महू में हुआ परशुराम प्रकटोत्सव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि इंदौर जिले में महू के निकट जानापाव सनातन संस्कृति के सात चिरंजीवियों में से एक भगवान श्री परशुराम की जन्मस्थली है। भारत भूमि पर यह एक अद्वितीय स्थल है। जब-जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ा, भगवान परशुराम ने शस्त्र उठाए और अधर्मियों का समूल नाश कर दिया और सनातन संस्कृति की रक्षा की। उन्होंने सनातन समाज को निर्भय होकर जीने का संदेश दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भगवान परशुराम जयंती पर महू में परशुराम प्रकटोत्सव को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने भगवान श्री परशुराम की जन्मस्थली पर पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि के लिए कामना की। उन्होंने कहा कि जानापाव में परशुराम धाम विकसित किया जाएगा। इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री महिला बाल विकास मंत्रालय श्रीमती सावित्री ठाकुर, राज्यसभा सदस्य श्रीमती कविता पाटीदार, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, विधायक सुश्री उषा ठाकुर, विधायक श्री गोलू शुक्ला सहित साधु-संत तथा बड़ी संख्या में पदाधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीराम से लेकर श्रीकृष्ण के काल तक भगवान परशुराम के पराक्रम और उनके शस्त्रों की महत्ता दिखाई देती है। भगवान श्रीराम जब स्वयंवर में पहुंचे तो वहां उन्होंने भगवान परशुराम का धनुष तोड़ा। इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के काल में भगवान परशुराम के सुदर्शन चक्र की लीला देखने को मिली। उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपना प्रिय सुदर्शन चक्र भगवान श्रीकृष्ण को दिया था। भगवान परशुराम कौरव-पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य के भी गुरु थे। उन्होंने निडर होकर धर्म की रक्षा का संदेश दिया ।

धर्म और संस्कृति को पल्लवित कर रही प्रदेश सरकार

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत भूमि पर देवी-देवताओं की कृपा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन?द्र मोदी के नेतृत्व में देश लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है। केंद्र सरकार देश की रक्षा के लिए हर संभव कदम उठा रही है। हमारी संस्कृति ÷जियो और जीने दो÷ पर आधारित है। प्रदेश में सनातन संस्कृति के विकास के लिए राज्य सरकार ने गीता भवनों के निर्माण का संकल्प लिया है। राज्य सरकार धर्म और संस्कृति को पुष्पित-पल्लवित करते हुए आगे बढ़ रही है। गरीब, अन्नदाता (किसान), युवा और नारी कल्याण के लिए 4 मिशन शुरू किए गए हैं। किसानों की समृद्धि के लिए प्रदेश में एक-एक खेत तक सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है। मध्यप्रदेश में 2 वृहद नदी जोड़ो परियोजनाओं केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चंबल की शुरुआत हो चुकी है। अब बुंदेलखंड, चंबल, निमाड़ और मालवा के कई जिलों के किसानों को पर्याप्त पानी मिलेगा।

विधानसभा अध्यक्ष तोमर के पुत्र के विवाह में अनेक राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों, राजनेताओं व फिल्मी हस्तियों ने शिरकत की

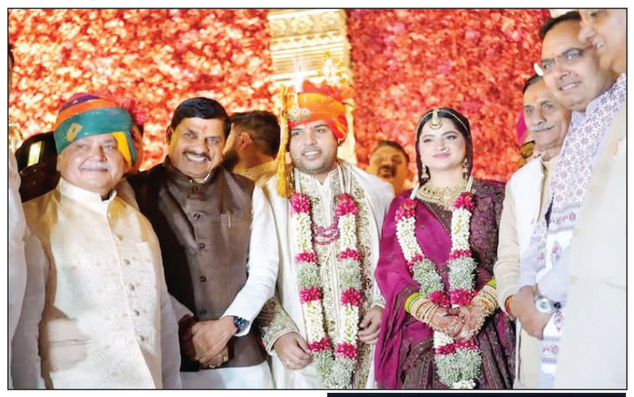

जयपुर/ग्वालियर भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर एवं श्रीमती किरण सिंह के छोटे पुत्र प्रबल प्रताप सिंह तोमर "रघु" का विवाह एवं पाणिग्रहण संस्कार पारंपरिक ढंग से समारोह पूर्वक संपन्न हुआ. जयपुर में संपन्न इस विवाह समारोह में 3 राज्यों के राज्यपालगण सर्वश्री थावरचंद गेहलोत (कर्नाटक), हरीभाऊ बागड़े (राजस्थान), ओम माथुर (सिक्किम) एवं 4 राज्यों के मुख्यमंत्रीगण डॉ मोहन यादव (मध्यप्रदेश), भजन लाल शर्मा (राजस्थान), पुष्कर सिंह धामी (उत्तराखंड), विष्णु देव सांय (छत्तीसगढ़) शामिल हुए, वर वधु को आशीर्वाद देने केन्द्रीय मंत्रीगण शिवराज सिंह चौहान, गजेन्द्र सिंह शेखावत, भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश, राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधराराजे, छत्तीसगढ़ के विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह ,मध्यप्रदेश भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वी डी शर्मा, मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्रीगण राजेन्द्र शुक्ला, जगदीश देवड़ा, राजस्थान के उपमुख्यमंत्रीगण दीया कुमारी सिंह, प्रेमचंद बेरवा, सांसदगण दुष्यंतसिंह (झालावाड़), भारत सिंह कुशवाह (ग्वालियर), शिव मंगल सिंह तोमर (मुरैना) एवं छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह सहित अनेक राज्यों के विधानसभा अध्यक्षों एवं मध्यप्रदेश मंत्रीमंडल के वरिष्ठ सदस्यों कैलाश विजयवर्गीय, राकेश सिंह, प्रहलादसिंह पटेल, ऐंदल सिंह कसाना, राकेश शुक्ला, विश्वास सारंग, राजस्थान सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों राज्यवर्धन सिंह सहित अनेक राजनेताओं ने वर वधु को आशीर्वाद दिया।

इस विवाह समारोह में बालीवुड के नामचीन कलाकार अरबाज खान, जैकलीन फर्नांडीज व प्रीति झांगियानी ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी. विवाह समारोह में धार्मिक , सामाजिक ,सांस्कृतिक सहित विभिन्न क्षेत्रों की हस्तियां आशीर्वाद देने पहुंची।

इन्दौर की प्रधान आरक्षक बबली खाखरे ने अन्तर्राष्ट्रीय योगासन स्पर्धा में जीता गोल्ड

इन्दौर। दिल्ली में आयोजित 2एनडी एशियन योगासन स्पोर्ट चैंपियनशिप 2025 में पुलिस कमिशनरेट की प्रधान आरक्षक बबली खाखरे ने शानदार प्रदर्शन करते हुए आर्टिस्टिक योगासन श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में बबली खाखरे ने भारत का प्रतिनिधित्व किया और गोल्ड मेडल जीतकर देश के साथ-साथ इंदौर पुलिस का भी गौरव बढ़ाया। बबली खाखरे की इस उपलब्धि पर इंदौर पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने उन्हें बधाई देते उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कमिश्नर संतोष सिंह ने कहा कि बबली जैसी अधिकारी पुलिस विभाग के लिए प्रेरणा हैं।

इस्कॉन की भूमिका वैश्विक है : मुख्यमंत्री

सागर जिले में आज आध्यात्मिक संस्कृति का हो रहा है सूर्योदय

सागर में पर्यटन विकास की संभावनाओं को साकार करने के प्रयास

मुख्यमंत्री ने सागर में 50 करोड़ की लागत से बन रहे इस्कॉन मंदिर की वर्चुअली रखी आधारशिला

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भूमि-पूजन कार्यक्रम को वर्चुअली संबोधित किया

भोपाल। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के संदेश और भारतीय संस्कृति को इस्कॉन संस्था ने विश्वभर में फैलाया है। भारतीय संस्कृति के प्रसार में इस्कॉन की भूमिका वैश्विक है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कलेक्ट्रेट, उज्जैन के एनआईसी कक्ष से सागर जिले के ग्राम मेनपानी में इस्कॉन मंदिर के भूमि-पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड अंचल गोपाल कृष्ण के आदर्शों को मानने वाली भूमि है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लगभग 50 करोड़ रूपये की लागत से सागर जिले के मेनपानी की पहाड़ियों में बनने वाले भव्य इस्कॉन मंदिर की वर्चुअली आधारशिला रखी। उज्जैन एनआईसी कक्ष में विधायक श्री अनिल जैन कालुहेड़ा भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस्कॉन इंटरनेशनल ने भगवान श्रीकृष्ण के विचारों एवं आदर्शों को देश में और विदेशों में जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निकले प्रत्येक वचन को 18 अध्याय में संकलित किया गया है, जिसे हम ÷भगवत गीता÷ कहते है। इन्हें जनमानस तक पहुंचाने में इस्कॉन इंटरनेशनल की महत्वपूर्ण भूमिका है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सागर जिले में अक्षय तृतीया पर सनातन संस्कृति के सूर्य का उदय हो रहा है। बुंदेलखंड महावीरों की धरती है। ऐसे में भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन के प्रसंग का अदभुत समन्वय बनेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंदिर निर्माण के लिए भूमि प्रदान करने वाले श्री विवेक यादव एवं उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सभी क्षेत्रों में विकास के प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार के साथ जब समाज सहयोगी बनता है तो असंभव माने जाने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस प्रकल्प से जुड़े सभी सहयोगियों और क्षेत्रीय सांसद, मंत्रीगण, विधायकगण सहित उपस्थित सभी जनप्रतिनिधियों को भी इस्कॉन मंदिन के भूमि-पूजन कार्यक्रम के लिए बधाई दी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि आज के दौर में संस्कारों की आवश्यकता है। संस्कारों से हमें सुख-शांति प्राप्त होती है और अपना जीवन भी सुखपूर्वक व्यतीत कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत के बाहर एवं भारत के अंदर इस्कॉन मंदिर की अनुयायी रहते हैं। अब सागरवासियों के साथ संपूर्ण बुंदेलखंड के लिए इस्कॉन मंदिर के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि हम धर्म को बढ़ावा देने के लिए इस्कॉन मंदिर परिवार का अभिनंदन करते हैं। खाद्य नागरिक एवं आपूर्ति मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि सागर में मंदिर बनने पर सागर के लोगों को रोजगार और पर्यटन के अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने कहा कि यह सागर के लिए गौरव की बात है कि हमारे यहां इस्कॉन मंदिर का निर्माण हो रहा है। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि इस्कॉन इंटरनेशनल के पूरे विश्व में अनुयायी है, जो अब सागर आएंगे। उन्होंने कहा कि इस्कॉन मंदिर ट्रस्ट धर्म के साथ-साथ समाज सेवा का कार्य भी करता है। सांसद श्रीमती लता वानखेड़े ने कहा कि इस्कॉन मंदिर के माध्यम से अब हमें भगवत गीता का संपूर्ण ज्ञान होगा। उन्होंने कहा कि इस भव्य एवं दिव्य मंदिर के बन जाने से सागर सहित संपूर्ण बुंदेलखंड का विकास होगा।

अंधड़ में गिरा महापौर और निगम टीम का धन्यवाद होर्डिंग

डर डर कर सिग्नल पार करते रहे राहगीर

इन्दौर। शहर में आज अचानक से मौसम के बदलाव के साथ चली धूलभरी आंधी में शहर के प्रमुख चौराहों पर लगें राहगीरों को छांव देने वाले शेड ने वाहन चालकों में घबराहट की स्थिति निर्मित कर दी। हालांकि इनकी गुणवत्ता और लगाने के तरीकों पर पहले भी कई सवालों के साथ विवाद शुरू हो गया था क्योंकि इन्हें राहगीरों की सुविधा के बजाय कंपनी के विज्ञापन डिस्प्ले के रूप में देखा जाते इनकी मजबूती पर शंका जताई जा रही थी। विवाद के बाद इन पर से कंपनी के विज्ञापन तो हटाकर कम कर दिए गए और उनकी जगह महापौर और नगर निगम टीम को धन्यवाद देते फ्लेक्स लगा दिए गए जिसमें थोड़ा कम पर कंपनी का नाम औरत विज्ञापन तो चलता ही रहा। आज शहर में चले अंधड़ ने इनकी मजबूती को भी दिखा दिया और बता दिया कि ये शहर के चौराहों पर से गुजरने वालों के लिए कितने खतरनाक है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में योग शिक्षकों की भूमिका पर विमर्श एवं सेवानिवृत्ति सम्मान

" टीच वन, ईच वन" मुख्य वक्ता शिक्षाविद डॉ. सुरेश चंद शर्मा द्वारा कहा गया यह सारांश वर्तमान समय में योग शिक्षकों की भूमिका विषय का सार स्वरूप अमृत रहा

ग्वालियर,नसं। यदि ज्ञान की समझ प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच गई तो समाज समृद्ध और सुखद बनेगा एक स्वस्थ और समृद्ध समाज के लिए ज्ञान के इस यज्ञ में पूर्णाहुति देते हुए लगना होगा ।ज्ञान युक्त भक्ति से सेवा कार्य करने वाले ही महान व्यक्तित्व बनते हैं। मुख्य अतिथि हृषीकेश वशिष्ठ प्रांतीय सचिव प्रांतीय योग प्रशिक्षित शिक्षक अध्यापक संघ ने कहा कि जीवन का उद्देश्य निर्माण करने वाला और उस पथ पर चलने में मदद करने में वाला ही शिक्षक गुरू बन जाता है। व्यक्ति अपने मन और बुद्धि को आत्मा को समर्पित करें तो सफलता सुनिश्चित है।

धार्मिक पूजा के बराबर होता है किसी जरूरतमंद की सेवा

यह बात कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ समाजसेवी डॉ केशव पांडे ने कही। डॉ वेद प्रकाश मुद्गल की विदाई के समय में एक तरफ हर्ष तो दूसरी तरफ विषाद के क्षण चल रहे थे । उन्होंने कहा कि हम चाहें कितने भी व्रत, अनुष्ठान और पूजा ,प्रार्थना क्यों न करें , यदि आप की संतुष्टि किसी छोटे कार्य से हो जाए तो फिर वह पूजा, व्रत और स्वांत: सुखाय के समान ही है द्य अतिथि परिचय एवं स्वागत प्रांतीय योग प्रशिक्षित शिक्षक अध्यापक संघ के जिला अध्यक्ष मुन्ना सिंह परिहार द्वारा किया गया ।स्वागत गीत आदेश गुप्ता संरक्षक प्रांतीय योग प्रशिक्षित शिक्षक अध्यापक संघ द्वारा प्रस्तुत किया गया एवम डॉक्टर वेद प्रकाश मुदगल (प्राध्यापक शासकीय अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय) ग्वालियर के सेवानिवृत्ति होने पर मुख्य अतिथि एवं समिति द्वारा शाल श्रीफल , चित्र भेंट किया।

मंच संचालन डॉ. रेखा श्रीवास्तव कार्यालय मंत्री ग्वालियर संभाग द्वारा किया गया । कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित हेमंत त्रिवेदी जिला समन्वयक राज्य आनंद संस्थान ग्वालियर, आदेश कुमार द्विवेदी जिला कोषाध्यक्ष, अखिलेश पचौरी जिला सचिव जिला योग संघ ग्वालियर, नरेंद्र दांतरे योग प्रशिक्षक,रवि भदौरिया योग प्रशिक्षक, किरण देव वर्मा ,हिमांशु जी मुद्गल,पत्रकार गौरव शर्मा आदि लोग उपस्थित रहे । मुकेश शर्मा, नीतू तोमर, राकेश जोशी, श्रीकांत मिश्रा, आदि ने शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन प्रांतीय योग प्रशिक्षित शिक्षक अध्यापक संघ के संभागीय सचिव श्री गोविंद मल्होत्रा द्वारा किया गया ।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने योगगुरू बाबा रामदेव का किया स्वागत

उज्जैन सांस्कृतिक राजधानी के रूप में हो रही है विकसित : स्वामी रामदेव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने योगगुरू बाबा रामदेव का उज्जैन आगमन पर पुष्प गुच्छ के साथ शॉल, श्रीफल एवं भगवान श्री महाकाल की तस्वीर भेंट कर आत्मीय स्वागत किया।बाबा रामदेव ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव विरासत मूलक विकास और संस्कृति के नए प्रतिमान प्रतिदिन गढ़ रहे हैं। मध्यप्रदेश धर्म भूमि भी है। मध्यप्रदेश में कृषि से लेकर उद्योग तक हर क्षेत्र में विकास के नये आयाम स्थापित हो रहे हैं। अब तो मध्यप्रदेश धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्तर पर भी उन्नति कर रहा है।

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक रामविलास शर्मा द्वारा चम्बल प्रिंटिंग प्रेस इण्डस्ट्रीज एरिया बानमोर से मुद्रित व एस 12 द्वितीय तल रायल प्लाजा पुराने हाईकोर्ट के सामने ग्वालियर से प्रकाशित । प्रधान संपादक रामविलास शर्मा मोबा.- 9329077393
email-chambalsurkhi@yahoo.com आर.एन.आई. पंजीयन नं MPHIN/2007/20705 सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र मुरैना रहेगा। कानूनी सलाहकार युवराज कुलश्रेष्ठ एडवोकेट मो.9229842150 फोन- (07532)- 225779,9827679954